छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह–पौष–माघ, संवत् 2076
जनवरी 2020

ओ३म्

अंक 171, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

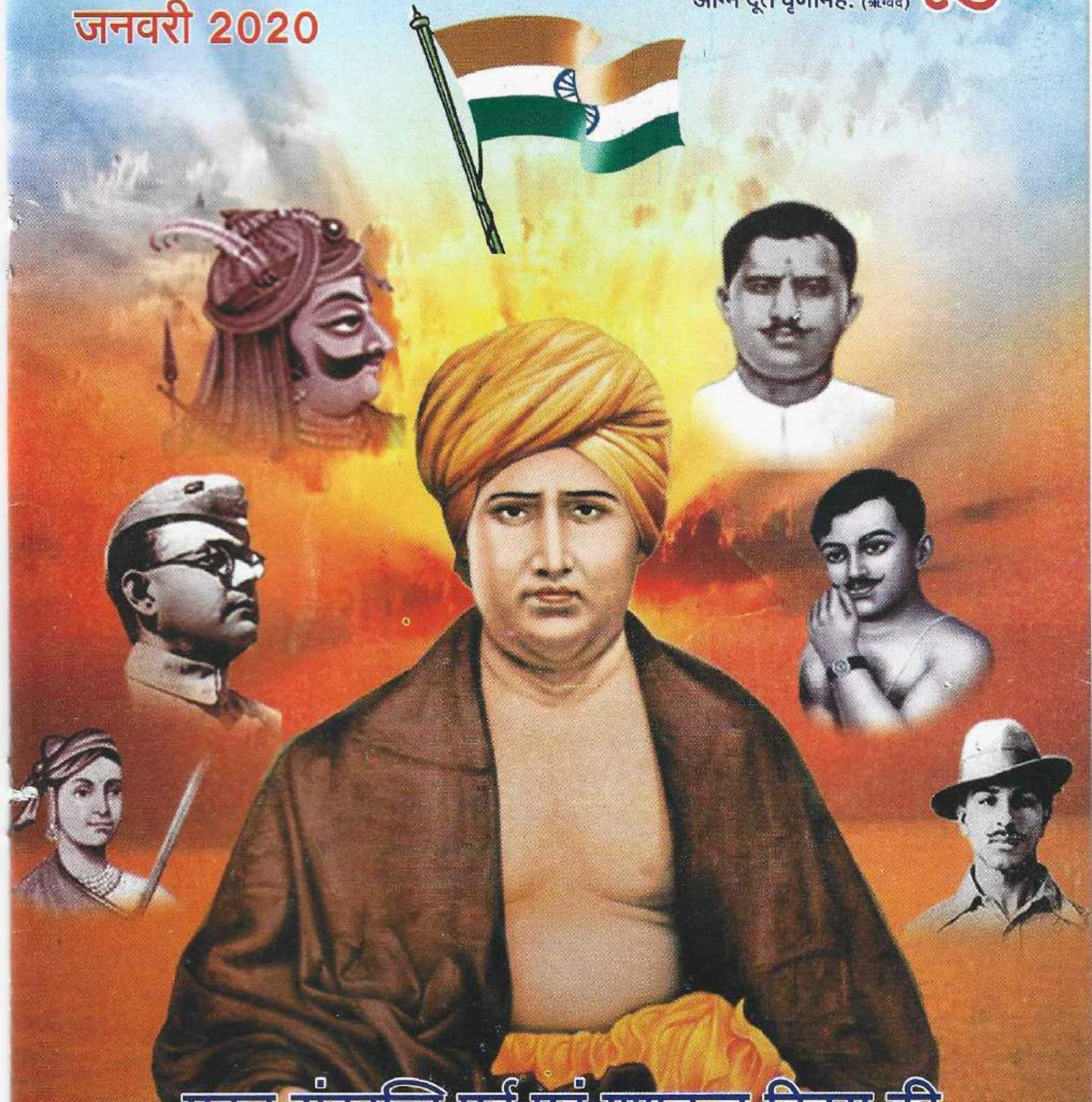

मकर संक्रान्ति पर्व एवं गणतन्त्र दिवस की

हार्दिक शुभकामनाऐं

आर्यसमाज बैजनाथपारा के तत्वावधान में श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय, संतोषीनगर, रायपुर में सम्पन्न श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर 34वाँ वार्षिक महोत्सव एवं त्रि-दिवसीय वैदिक यज्ञ कार्यक्रम की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष – १५, अंक ६ ओ३म् मास/सन् –जनवरी २०२०

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सञ्ज्ञसञ्ज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विक्रमी संवत् – २०७६
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,१२०
दयानन्दाब्द – १९७

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८१०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८–४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

विषय – सूची

पृष्ठ क्र.

१.	प्राणों का कर्त्तव्य	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	आखिर कैसे करें रचनात्मक देश की भावी पीढ़ी को ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	भारतीय संविधान का सच	आचार्य आर्यनरेश	०८
४.	यज्ञदेश, यज्ञशाला, यज्ञकुण्ड, यज्ञपात्र घी, सामग्री एवं समिधा कैसी हो ?	महात्मा चैतन्यस्वामी	११
५.	कैसा हो हमारा नया साल	विनोद बंसल	१५
६.	सार्वदेशिक सभा के जन्म और विकास का इतिहास	मनमोहन कुमार आर्य	
७.	अनेक पर्वों का महापुञ्ज : मकर संक्रांति	मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति	२०
८.	भारत माँ को गर्व है जिस लाल पर – लाला लाजपतराय	भवानीलाल भारतीय	२३
९.	कविता : क्या यही गणतंत्र है	श्रीमती दीपाली वर्मा	२६
१०.	लोह पुरुष : स्वामी स्वतन्त्रतानन्द	स्वामी सदानन्द सरस्वती	२७
११.	"किस्त"	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	२९
१२.	वैदिक दर्शन, आरोग्य और होमियोपैथी	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३१
१३.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क-१००/= दसवर्षीय-८००/=

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्राणों का कर्तृत्व

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

न स जीयते मरुतो न हन्यते, न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतयः, ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ॥ ऋग्. ५,५४,७

ऋषिः श्यावाश्वः आत्रेयः। देवता मरुतः। छन्दः जगती।

(मरुतः) हे प्राणो ! (तुम) (यं) जिस (ऋषिं वा) ऋषि को (राजानं वा) या राजा को (सुषूदथ) प्रेरित या रक्षित करते हो, (सः) वह (न जीयते) न जीता जाता है, (न हन्यते) न मारा जाता है, (न स्रेधति) न क्षीण होता है, (न व्यथते) न व्यथित होता है, (न रिष्यति) न हानि प्राप्त करता है, (न) न (अस्य) इसकी (रायः) सम्पत्तियाँ (उपदस्यन्ति) क्षीण होती है, (न) न ही (ऊतयः) रक्षाएँ।

प्राण मनुष्य-शरीर में एक बड़ी सबल शक्ति है। प्राण-रुप अश्व ही इस शरीर-रथ को वहन कर रहा है। उपनिषद् के ऋषि कहते है कि एक बार देहस्थ सब शक्तियों में विवाद उपस्थित हो गया कि हममें कौन बलिष्ठ है। चक्षु, श्रोत्र, मन आदि सब स्वयं को बड़ा कहने लगे। वे प्रजापति के पास निर्णय के लिए पहुंचे। प्रजापति ने उन्हें एक सूत्र बताया कि जिसके शरीर के निकल जाने पर शरीर दरिद्रतर हो जाये, वही तुममें सबसे बड़ा है। सबने क्रमशः परीक्षा की। चक्षु, श्रोत्र, मन आदि के एक-एक कर निर्गत हो जाने पर भी शरीर पूर्ववत् सजीव बना रहा, केवल उस-उस इन्द्रिय के व्यापार से शून्य हो गया। परन्तु जब प्राण शरीर से निकलने लगा, तब जैसे कोई बलवान् घोड़ा निकलते समय बन्धन के खूंटों को भी अपने साथ उखाड़ ले जाता है, वैसे ही प्राण चक्षु आदि इतर इन्द्रियों को भी अपने साथ ले जाने लगा। तब सब इन्द्रियों ने प्राण का सिक्का मान लिया कि तुम्हीं हम सबमें बलिष्ठ हो।

हे प्राणो ! तुम जिस जन के, जिस ऋषि के, जिस राजा के अनुकूल हो जाते हो, जिसे तुम्हारी प्रेरणा और रक्षा प्राप्त हो जाती है, उसे कोई जीत नहीं सकता, उसे कोई मान नहीं सकता, उसे कोई क्षीण नहीं कर सकता, उसे कोई व्यथित नहीं कर सकता, उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। प्राणों का आयाम करने से ऋषि का ऋषित्व स्थिर रहता है, राजा का राजत्व अक्षुण्ण रहता है। राष्ट्र में जो कार्य वीर क्षत्रिय करते हैं, वही कार्य शरीर में प्राणों का है। प्राणमय कोष की सम्पदा को सुरक्षित रखने से, प्राणायामादि द्वारा प्राण को बलवान् बनाते रहने से, मानव-शरीर की कोई सम्पत्ति क्षीण नहीं होती, अपितु वह सुरक्षित और प्रफुल्ल बनी रहती है। प्राण के निग्रह से इन्द्रियादि के दोष वैसे ही नष्ट हो जाते हैं, जैसे अग्नि में तपाई जाती हुई धातुओं के मल दग्ध हो जाते हैं। अतः आओ, हम भी अपने प्राणमय कोष को समृद्ध करें।

संस्कृतार्थ :- १. सुषूदथ क्षारयथ प्रेरयथ सत्कर्मसु (षूदक्षरणे) (सायण)। रक्षथ (द भा)। २. स्रिध हिंसार्थः। ३. रिष हिंसायाम्। ४. उप दसु उपक्षये।

सम्पादकीय

आखिर कैसे करें रचनात्मक देश की भावी पीढ़ी को ?

हमारे बच्चे ही हमारी धरोहर हैं, ये ही कल के हमारे भविष्य हैं, इनकी रचनात्मकता ही आगामी कल का स्वर्णिम इतिहास लिखेगी। आइए, यह विचार करें कि हम किस प्रकार इस महाशक्ति को सकारात्मक दिशा में गति दे सकते हैं। किसी विचारक ने लिखा है- बच्चे मिसाइल हैं और आप गाइड हैं। मिसाइल का काम लक्ष्य भेदना ये काम वे करेंगे ही गाइड का काम है उन्हें सही दिशा में प्रयास करना, अन्यथा गलत लक्ष्य का भेद हो जायेगा।

बच्चे स्वभाव से ही सृजनशील होते हैं। उनके सामने जो कुछ भी है वह सब कुछ उनके लिये कौतूहल की चीज है। बच्चे सभी चीजों के विषय में जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर लेना चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा हीहै जो उन्हें हरदम सचेत रखती है। सफर में जब आप ऊंघते हैं उस समय बच्चा खिड़कियों से बाहर का दृश्य देख रहा होता है। इन दृश्यों को देखते हुए उसके मन में अनेकानेक सवाल उभरते जाते हैं। यदि उसके अभिभावक बाल मनोविज्ञान के जानकार हैं, बच्चे की जिज्ञासा में रुचि लेते हैं तो बच्चा अभिभावक से सवाल करता है। इस तरह जानकारी बढ़ती जाती है और उसके मस्तिष्क का स्वाभाविक विकास होता है। इसके विपरीत ज्यादातर बच्चों को ऐसी माहौल नहीं मिलता, जहां वे अपनी शंकाओं का समाधान कर सकें। ऐसे बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को मन ही मन खाते जाते हैं और फिर आगे चलकर उनके मस्तिष्क में जिज्ञासाएँ जन्म लेना ही बन्द कर देती हैं। ऐसे बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास सम्भव नहीं है। यही नहीं उनमें अन्वेषण और खोजपरक दृष्टि का अभाव हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा की आधुनिक मांटेसरी और किंडरगार्डन पद्धति का विकास इसी परिप्रेक्ष्य में हुआ है। इन पद्धतियों में बच्चा कक्षा में निष्क्रिय श्रोता नहीं होता। अध्यापक कक्षा का वातावरण कुछ इस तरह बनाता है कि बच्चा अधिक से अधिक सक्रिय रहे। बच्चा अधिक से अधिक सवाल करता है। यह शिक्षक का कौशल होता है कि बच्चे ही बच्चों के सवाल का जवाब भी खोजते हैं। शिक्षक की भूमिका गाइड की होती है।

तीन साल तक का बच्चा एकाकी खेलना पसंद करता है। जबकि अधिक आयु वाले बच्चे समूह में खेलना पसंद करते हैं। अभिभावक और शिक्षक को बच्चों की इस तरह की प्रवृत्तियों की जानकारी होनी चाहिए। एकाकी खेलने वाले बच्चों को समूह में नहीं रखना चाहिए। बल्कि उन्हें इस तरह के खिलौने दिये जाएँ, जिससे वे एक ही स्थान पर खिलौनों से खेल सकें। इसके विपरीत बड़े बच्चे खेलकूद एवं अन्य काम समूह में करना पसंद करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति को न जानने वाले कई बार बच्चों को एकाकी रहने, खेलने और पढ़ने की सलाह देते हैं। जो कि अनुचित है। कई बार बच्चों के छोटे-मोटे झगड़ों को लेकर अभिभावकों में खूनी संघर्ष तक हो जाता है। जबकि यही बच्चे कुछ ही

देर बाद फिर आपस में मिलजुल कर खेलना कूदना शुरु कर देते हैं। इस तरह बच्चों की प्रवृत्ति को न जानकर लोग बच्चों के लिये व्यर्थ ही परेशानी मोल ले लेते हैं।

वास्तविकता यह है कि आज न तो घर में और न स्कूल में ही ऐसा वातावरण हैं जहां बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हो सके। स्कूलों में किताबी सूचनाएँ ठूंस-ठूंस कर बच्चों के मन मस्तिष्क में भरी जाती है। स्कूलों में खेलकूद एवं अन्य पाठ्यसामग्री क्रियाओं का लगभग अभाव देखा जाता है। करके सीखने के सिद्धान्त केवल किताबों में ही सीमित रह गए हैं। विज्ञान-शिक्षा जो पूर्णतया प्रायोगिक ज्ञान पर ही आधारित है, वहां भी सैद्धान्तिक ज्ञान ही अधिक दिया जाता है। विज्ञान के उपकरण और प्रयोगशालाओं के नाम पर तो अधिकांश विद्यालयों में सिर्फ औपचारिकता मात्र पूरी कर रहे हैं। जहां ये चीजें हैं भी वहां प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव है। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर पहुँचे इस देश में अभी भी अधिकतर अन्धविश्वास का बोलबाला है। भूतप्रेत अभी भी यहां डेरा जमाए बैठे हैं। जाति-पाति जैसे दकियानूसी और सड़ी गली परम्पराएँ दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से फल फूल रही हैं। बच्चों की जिज्ञासाओं के स्वस्थ समाधान के लिए साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश आज हिन्दी क्षेत्र में बाल-साहित्य को दोयम दर्जे पर रखा जा रहा है। स्तरीय साहित्यकार बाल साहित्य लिखना अपनी तौहीन समझतें हैं। जो कुछ साहित्य लिखा भी जा रहा है वह या तो बच्चों के स्तर से ऊपर का है या अवैज्ञानिक है। कामिक्स बच्चों में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। लेकिन कामिक्स की कथावस्तु में भूत-प्रेत, सुपरमैन, परियाँ, अलौकिक घटनाएँ और चमत्कार ही छाये हुए हैं। कामिक्स में जो कहानियां लिखी होती है उनका व्यवहारिक जीवन में कोई सरोकार नहीं होता। फलतः ऐसे कामिक्स बच्चों के कोमल मस्तिष्क के विकास के बजाय उसमें विकृति ही पैदा करते हैं।

खेलकूद एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बहुत अच्छा और स्वाभाविक ढंग से होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे बच्चों में बहुत कम को ऐसा वातावरण प्राप्त है। स्कूलों में यद्यपि खेल के लिए अलग से शिक्षक जरुर रखे जाते हैं लेकिन खेल को परीक्षा में कोई महत्व नहीं दिया जाता। जिससे बच्चे खेल को उतनी वरीयता नहीं देते जितनी कि पाठ्यक्रम को। छोटे बच्चों के लिए सरकारी स्कूलों में तो छोटे खेल के मैदान होते हैं। लेकिन कुकुरमुत्ते की तरह उग आए नर्सरी स्कूलों में खेल के मैदान या खेलकूद के वातावरण का तो कोई सवाल ही नहीं। अभिभावक या समाज की दृष्टि में जो स्कूल जितना ही अच्छा माना जाता है वहां खेलकूद की उतनी ही उपेक्षा होती है। वास्तव में यह बहुत ही गम्भीर बात है। ये ही कुछ मूलकारण है जिनके कारण ओलम्पिक जैसी विश्व स्तरीय खेल-स्पर्धाओं में हमारा देश शून्य से आगे नहीं बढ़ पाता। रियो ओलम्पिक इसका ज्वलन्त उदाहरण है जिसमें एक सौ उन्नीस खिलाड़ी भाग लिए और पदक मिले सिर्फ तीन ही। बालक ही देश के भावी निर्माता व कर्णधार होते हैं तथा उनके ऊपर ही देश का भविष्य निर्भर होता है, अतएव उसमें विभिन्न प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न कर उनकी सृजन क्षमता का विकास करना परमावश्यक माना गया है। इस सृजन-क्षमता के विकास का दायित्व बालकों के अभिभावकों एवं अध्यापकों पर होता है। अभिभावकों की भूमिका का प्रतिपादन इसलिये किया गया कि बालक चौबीस में १८ घण्टे उन्हीं के सम्पर्क में रहता है। शेष छः घण्टे वह अध्यापकों के सान्निध्य में गुजारता है। इस प्रकार अध्यापक की अपेक्षा तीन गुना अधिक समय वह अभिभावक को देता है। इसीलिये सृजन-प्रतिभा के विकास में अभिभावक का योगदान महत्वपूर्ण माना गया है।

कुछ न कुछ सृजन-क्षमता प्रत्येक बालक के संस्कार में होती है। आवश्यकता केवल उसके विकास की पड़ती है। अपनी रुचि का विषय होने के कारण बालक उस विषय में दिये गये ज्ञान को शीघ्र आत्मसात् कर लेता है क्योंकि उस विषय में उसकी सृजन-क्षमता विकासोन्मुख होती है। कुशल शिक्षक बालक की रुचि एवं उसकी प्रकृति-प्रदत्त प्रतिभा का पूर्ण लाभ उठाते हुये तद्नुकूल उसकी सृजन-क्षमता का विकास करता है। डी.ए.वी. छाल (छ.ग.) के विज्ञान शिक्षक श्री अजय शर्मा का एक छात्र आदर्श साहू (११वीं) ने "इको फ्रेंडली स्मार्ट हाऊस" पर एक ऐसा प्रोजेक्ट बना दिया है जो बिजली के

अपव्यय को रोकने में बेजोड़ है। सृजन के अनेक पक्ष हैं, इनमें से प्रमुख पक्षों का संक्षिप्त विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है -

साहित्यिक-सृजन :- कुछ बालक छात्रावस्था से ही साहित्य में अभिरुचि रखते हैं। उनमें काव्य, कहानी, निबन्ध, नाटक या समीक्षा-लेखन की पूर्ण प्रतिभा होती है। कुछ वाद-विवाद या भाषण देने की कला में पटु होते हैं। ऐसे साहित्य प्रेमी बालकों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार साहित्य के किसी एक क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान देकर उन्हें स्वस्थ-साहित्य-सृजन के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। इस प्रकार देश में अनेक कवि, लेखक, समीक्षक और तर्कशास्त्री उत्पन्न होंगे जो देश की साहित्यिक प्रगति में योगदान करके इसका गौरव बढ़ायेंगे।

कलात्मक-सृजन :- कलायें दो प्रकार की होती है। १. ललित कला, २. उपयोगी कला। ललित कला में साहित्य, संगीत, वादन एवं चित्र कला का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उपयोगी कक्षा में - बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, सुनारगीरी, राजगीरी, चर्मकारी एवं बुनकरी का नाम आता है। दोनों प्रकार की कलायें मानव-जीवन के लिये आवश्यक होती है। ललित कलाओं से आनन्द, यश और धन की प्राप्ति होती है तथा उपयोगी कलाओं से जीविका की। देश की बहुमुखी प्रगति के लिये दोनों प्रकार की कलाओं का सृजन आवश्यक होता है। अतः अध्यापकों को चाहिए कि जिस छात्र की रुचि कला में हो उसे उस विषय का सम्यक् ज्ञान देकर उसकी सृजन क्षमता का विकास करें।

वैज्ञानिक-सृजन :- अनेक बालक विज्ञान के प्रति आरम्भ से ही जिज्ञासु होते हैं। वे प्रकृति के विभिन्न क्रिया-कलापों एवं उसकी शक्तियों का सदुपयोग कर संसार को कोई नया आविष्कार दे जाने की क्षमता रखते हैं। उनमें भी कुछ जीव विज्ञान, कुछ भौतिक विज्ञान और कुछ रसायन विज्ञान में अभिरुचि रखते हैं। प्रयोग द्वारा समस्त पदार्थों, रसायनों और जीवों का सूक्ष्म अध्ययन करना उनके स्वभाव का अंग बन जाता है। ऐसे की वैज्ञानिक प्रतिभा का लाभ उठाकर उन्हें उचित निर्देशन द्वारा वैज्ञानिक-सृजन के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस प्रकार संसार को अच्छे वैज्ञानिकों और अनेक नये आविष्कारों की प्राप्ति होगी जिससे मानव-मात्र के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

तकनीकी-सृजन :- बालकों में जोड़-तोड़ की प्रवृत्ति स्वाभाविक रुप से होती है। यह प्रवृत्ति ही तकनीकी सृजन की जन्मदायिनी है। विभिन्न मशीनों के पुर्जों का उपयोग कर कोई नई मशीन बनाना, या पुर्जों का बनाना, बिजली, पेट्रोल, डीजल आदि का उन कार्यों में उपयोग करना, जिसमें उनका पहिले प्रयोग न किया गया हो। यह सब तकनीकी सृजन के अन्तर्ग आते हैं। कल-पुर्जों, वाहनों और संचार-साधनों की सफाई का मरम्मत करना, ठोस-द्रव और गैस के प्रयोग से कोई उपयोगी उत्पादन करना भी तकनीकी सृजन कहा जायेगा। कुछ बालकों में पढ़ने-लिखने की प्रवृत्ति कम, टेक्नालॉजी की अधिक होती है। उन्हें इसी ओर बढ़ना चाहिये। टेक्नोलॉजी विज्ञान का ही एक अंग है। देश की औद्योगिक प्रगति के लिये इस रुचि के बालकों में तकनीकी-सृजन की क्षमता का विकास करना कुशल शिक्षक का काम है।

औद्योगिक-सृजन :- देश की आर्थिक प्रगति के लिये विभिन्न उद्योग-धंधों का विकास आवश्यक होता है। उद्योग-धंधों का विकास तभी संभव होगा, जब बालकों में औद्योगिक-सृजन में बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के उत्पादन की ही नहीं, छोटे-छोटे कुटीर-उद्योगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ बालकों में नौकरी या खेती की बजाय उद्योग-धंधों की अभिरुचि अधिक पाई जाती है। अध्यापक को चाहिये कि ऐसे बालकों के स्वभाव का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करे कि वह किस उद्योग में अभिरुचि रखता है ? जिसमें उसकी रुचि हो उसी उद्योग के विभिन्न आयामों का ज्ञान देकर उसे औद्योगिक-सृजन में दक्ष करना चाहिये, इसलिए समय की मांग यही है कि कल के हमारे भविष्य को अधिक से अधिक रचनात्मक बनाना ही देश को उन्नत करके खुशहाल बना पायेंगे अन्यथा नहीं। इस प्रकार देश में हर प्रकार के सृजन-कर्ता उत्पन्न होंगे जो अपने-अपने सृजन द्वारा राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकेंगे।

- आचार्य कर्मवीर

राष्ट्रीय

भारतीय संविधान का सच

गणतन्त्रता दिवस पर विशेष

क्या पाखण्ड, लूटमार, कत्लेआम, आभजनों, पशुहिंसा व मानवों में फूट फैलाने वाला मजहब धर्म हो सकता है ?

- आचार्य आर्यनरेश
वैदिक गवेषक

हमने इस्लामिक-आतंकवाद, मजहबी झगड़े एवं गौ आदि प्राणियों की हत्या को रोकने हेतु न चाहते हुए भी आर्यावर्त (भारत) के बटवारे को स्वीकार किया। अत्यन्त दुःख एवं चिन्तन का विषय है कि मुसलमानों की पूर्ण उन्नति हेतु बने पाकिस्तान में उक्ो मजहब एवं जीवन की पूर्ण सुरक्षा मिली पर हिन्दुओं को नहीं। तथाकथित स्वतन्त्रता के ७२ वर्ष पश्चात् भी झूठी धर्मनिरपेक्षता के कारण भारत के मूल नागरिक, उनकी वैदिक संस्कृति तथा गौ आदि पशु भी सुरक्षित नहीं है। इस्लामिक आतंकवाद के कारण गत वर्षों में हजारों हिन्दू मौत के घाट उतारे जा चुके हैं। यही स्थिति धर्ण के नाम पर फैले पाखण्ड की भी है। जिसने जादू-टोने के नाम पर अनेकों मनुष्यों तथा पशुओं को या तो मौत के मुंह में पहुंचा दिया है अथवा अनेकों योग्यों नागरिकों को छुआछूत, भाग्यवाद तथा चमत्कारों के नाम पर विधर्मी, आलसी, प्रमादी तथा निकम्मा बना दिया है। जब भी राष्ट्र पर कोई मुसीबत आती है अथवा राष्ट्र की अस्मिता लुटने लगती है तब उसके लिए कुछ समाधान करने की अपेक्षा यहाँ की जनता यह कहकर चुप्पी साध लेती है कि यह सब तो ईश्वर की ही लीला है।

भारत को आतंकवाद तथा पाखण्ड के मुंह में धकेलने का मुख्य कारण संविधान की धारा २५ को न समझकर नेताओं तथा मजहबी लोगों द्वारा फैलायी गयी झूठी धर्मनिरपेक्षता है। सत्य तो यह है कि भारत का संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक को पाखण्ड एवं अंधविश्वास को छोड़कर वैज्ञानिक तथा तार्किक मादा रकने का उपदेश करता है। इतना ही नहीं अपितु भार के संविधान में धर्मनिरपेक्षता का नामोनिशान नहीं है। क्योंकि संविधान के हिन्दी अनुवाद में सेकुलर शब्द का अर्थ धर्मनिरपेक्ष न करके मतनिरपेक्ष किया है। यदि भारत का संविधान धर्मनिरपेक्ष होता तो उसमें दिये गये भारत सरकार के छापे अथवा मोहर पर सत्यसनातन वैदिक धर्म का वाक्य सत्यमेव जयते न लिखा जाता। अपितु उसके स्थान पर कुरान, बाईबिल अथवा यहुदी आदि किसी अन्य मजहब का वाक्य लिखा जाता। क्या सर्वप्रथम एवं सर्वोपरि धर्म के वाक्य का उपदेश करने वाला संविधान भी कभी धर्मनिरपेक्ष हो सकता है ? अत्यन्त दुःख और आश्चर्य का विषय है कि इस बात को न जानकर तथा धारा २५ को न समझकर ही देशके स्वार्थी तथा मत लोभी नेताओं एवं राष्ट्रद्रोही मतान्ध जनों ने विश्व भर के लोगोंको आश्रय देने वाली भारतभूमि को आतंक तथा पाखण्ड के मुंह में धकेल दिया है।

अब हम संविधान की धारा २५ पर विचार करते हैं, जिसको कि न समझकर संपूर्ण विश्व पर शासन करने वाला भारत इस्लामिक आतंकवाद का गुलाम बनता जा रहा है। धारा २५-१ के अन्तर्गत जो व्यक्तिगत मत-मजहब के पालने की स्वतन्त्र छूट अथवा अधिकार दिया गया है वह एक सर्वथा यथा-इच्छा खुली छूट (मनमानी) नहीं है। अर्थात् भारत के संविधान द्वारा धारा २५-१ के अन्तर्गत दी गयी छूट मर्यादित सीमा से बंधी हुई है। १९५२ में मुम्बई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मु. करीम छागला और न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र गडकर ने इसी धारा २५ के मौलिक अधिकार पर निर्णय देते हुए एक फैसला सुनाया था कि मत-मजहब को पालने का स्वतन्त्र अधिकार सीमा रहित न होकर नैतिकता से प्रतिबंधित है। अर्थात् भारत का संविधान किसी भी अनैतिक राष्ट्र विरोधी, मानवता विरोधी, पशुबलि, राष्ट्रद्रोह, गौ आदि प्राणियों की हत्या, काफिर के नाम पर देश के मौलिक जनों अर्थात् आर्य हिन्दुओं के कत्लेआम का प्रेरक व विश्व भर के मानवों को जन्म देने

वाली आर्यनारियों के प्रति गुण्डागर्दी को प्रेरणा देने वाले कुरान आदि मत-मजहब के व्यवहार को छूट नहीं देता।

देश की आम जनता के लिए घातक एवं अनैतिक ईस्लामिक आतंकवाद के जेहाद-पूर्ण वातावरण में यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि भारत का संविधान धारा २५ के अन्तर्गत इस देश में रहने वाले नागरिक को आखिर किस प्रकार के मजहब की स्वतन्त्रता देता है ? जैसे कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि हमारे संविधान में ऐसे किसी भी प्रकार के मजहब को छूट नहीं दी गयी है जो कि अनैतिक है। जैसे कि बहुपत्नी विवाह-क्योंकि जैसे कि एक मुसलमान पति यह नहीं चाहता कि उसकी पत्नी किसी और पुरुष को चाहे, तो फिर नैतिकता की दृष्टि से कोई मुसलमान महिला भी ये नहीं चाहती कि उसका पति किसी दूसरी महिला पत्नी को चाहे। दूसरी बात संविधान की धारा २५-३ में यह कहा गया है कि मजहब पर्यावरण व स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाला न हो। अर्थात् जिस मजहब की शिक्षाओं से मानव-मानव का शत्रु बनता है और जैसे कि कुरान की अनेकों आयातों की शिक्षा के अनुसार गैर मुसलमानों अर्थात् आर्य हिन्दुओं का खून करने, उन्हें दोस्त न बनाने, उनके घरों व धनों को लूटने की शिक्षा देता हैं। इतना ही नहीं अपितु कुरान ८-४-१ और २४-३३-५० के अनुसार गैर मुसलमानों की स्त्रियों को मुसलमानों के यौनाचार की सामग्री बताता है। गैर मुसलमानों को उन्हें आग में झोंकने की बात करता है। अतः ऐसे मानवता के विरोधी अनैतिक एवं असामाजिक मजहब को संविधान की कदापि छूट नहीं है।

भारत सरकार दिल्ली कोर्ट के सुयोग्य जज श्री जेड. एस. लोहाट ने (एफआईआर.२३७-८३, वी-५९६ पुलिस स्टेशन हाउजकाजी) कुरान की आयतों पर निर्णय देते हुए कहा था कि इन्हीं आयतों के कारण मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच झगड़े व खून होते हैं। संविधान की धारा २५ के अन्तर्गत यह स्पष्ट कहा गया है कि जिस मजहब के आचरण से संवैधानिक व्यवस्ता बिगड़ती है। ऐसे अनैतिक मत-मजहब को छूट नहीं है। अर्थात जहां भारत एक ओर जनसंख्या के कारण बेरोजगारी व भुखमरी से पीड़ित व चिन्तित हैं वहां यह मुस्लिम लोग वोट को बढ़ाकर इस्लामिक राज्य स्थापित करने की गंदी भावना से अधिक से अधिक बच्चे पैदा करके यहां की सार्वजनिक व्यवस्था को और अधिक बिगाड़ रहे हैं। इतना ही नहीं अपितु मरने के पश्चात् भी अपनी लाशों को सार्वजनिक हित में (मुहम्मद करीम छागला की तरह) चलाने की अपेक्षा भारत भूमि में दबाकर उसे और अधिक बंजर बना रहे हैं।

इस देश के तथाकथित वोट व धनलोभी नेता तथा जनता को यह बात गंभीरतापूर्वक विचारनी चाहिए कि भारत का संविधान जो कि यहां के नागरिकों को वैज्ञानिक व तार्किक विचार रखने, परस्पर प्रेम व सौहार्द्र का व्यवहार करने तथा भारत की प्राचीन संस्कृति, गो तथा मातृभूमि के प्रदि आदर का भाव रखने की शिक्षा देता है, आखिर वह इससे विपरीत कैसे किसी आतंकवादी अथवा पाखण्डी मजहब को चलने की छूट दे सकता है ?

अतः इस संवैधानिक चर्चा से यही सिद्ध होता है कि धारा २५ किसी भी नागरिक, समाज या मजहब को जो कि अन्य विचार वालों को कत्ल करने, राष्ट्र की आर्थिक आधारशिला गो आदि पशुओं को काटने, नारियों का बहुपत्नी विवाह से बलात्कार द्वारा अपमान करने, पृथ्वी को चपटा बताकर अज्ञान फैलाने, अधिक बच्चे पैदा करके सार्वजनिक व्यवस्था बिगाड़ने व आतंकवादियों को अपने घर पर छिपाने वाले राष्ट्रद्रोही मजहब को छूट नहीं देता। यदि बच्चे देशभक्त बुद्धिजीवी जन कुरान की कत्लेआम करवाने वाली शिक्षाओं पर विश्वास करने वाले मुसलमानों को नागरिकता व मत देने का अधिकार समाप्त करवा दें तो भारत में वोटों के भूखे नेता तथा आतंकवादी स्वयं ही समाप्त हो जाएं और इसके साथ-साथ बेरोजगारी तथा भुखमरी की समस्या भी सदा के लिए हल हो जाए। राष्ट्रवादी वकीलों व देशभक्त लोगों को चाहिए कि इस धारा २५ के भ्रान्तिनिवारण हेतु नेताओं को समझायें व पत्र-पत्रिकाओं में लेख छापें।

मुसलमान मजहब के पर्शनल ला शरियत के अन्तर्गत हुदूसे इस्लाम एक ऐसा अनिवार्य कानून है कि जिसकी अवहेलना करने पर कोई भी व्यक्ति मुसलमान

नहीं माना जाता। इस कानून में विभिन्न अपराधों की सजाओं का वर्णन है। जैसे कि चोरी करने पर सार्वजनिक रुप से हाथ-पैर को काट देना, शराब पीने पर सार्वजनिक रुप से ६० कोड़े लगाना, किसी भी चरित्रवान स्त्री पर गलत आरोप लगाने पर सार्वजनिक रुप से ८० कोड़े की सजा देना, किसी पुरुष या स्त्री के साथ बलात्कार करने पर सार्वजनिक रुप से पत्थर मार-मार कर जिन्दा ही मौत की सजा देना लिखा है। भारत सरकार को चाहिये की यहां रहकर मुसलमान होने के नाते किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त करने के लिए शीघ्र ही उपरोक्त सारी सजाएं देना अनिवार्य कर दे, जिससे कि एक तो वे सच्चे मुसलमान सिद्ध हो सकें और दूसरे उनके मजहब की भारत में रक्षा भी हो सके। जो मुसलमान यह सब सजायें न लेना चाहें उन्हें गैर मुसलमान समझकर सारी सुविधायें छीन ली जाएं और कुरान के अनुसार काफिर सिद्ध होने से क्यों न उनको सार्वजनिक रुप से कत्ल करवा दिया जाए।

आतंकी मुस्लिम जिहादियों का नया नारा : भारत में हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान का नारा लगाने वाले लोग देशद्रोही है (आजमखान सांसद सपा) भारत देश मुस्लिम आदि लोगों का है। न कि आर्यों का, क्योंकि आर्य लोग बाहर से आए हैं। यहां रहने वाले मूल निवासी ही मुसलमान आदि बने थे। अतः यह देश उनका है। प्रमाण हेतु देखे समाचार पत्र मुस्लिम इण्डिया २७ मार्च १९८५।

इस मान्यता को तथा इस देश पर सैकड़ों वर्ष मुगलों ने राज्य किया है। बात को ध्यान रखकर मुसलमान 'पाकिस्तान' के पश्चात् सेकुलर कृमियों के आशीर्वाद से अपनी जनसंख्या बढ़ाकर अब कश्मीर को भी पृतक 'मुस्लिम राज्य' बनाने का आंदोलन चला रहे हैं। कुछ कठोर कारवाई करने की अपेक्षा कुर्सी लोभी भारत सरकार नेता 'मुस्लिम वोट बैंक' के प्रलोभन में देश को कहीं पुनः न बटवा दें।

पता - उद्‌गीय साधना स्थली, हिमाचल प्रदेश

हमारी नीति आचार-परम्परा

भारत अति प्राचीन समय से ही विश्व का नैतिक तथा आध्यात्मिक गुरु रहा है। हमारा नैतिक स्वरुप अध्यात्मिक स्वरुप के अधीन है। वर्तमान कर्म का बीज कालान्तर में अंकुरित होता है, यही धारणा हमें अनैतिक कर्मों से बचाए रखती है। हमारे यहां मनीषी महापुरुषों के अवतारों का उद्देश्य संसार को नैतिक शिक्षा से समन्वित करना तथा धर्म की व्यवस्था करना रहा है। जन-जन से परिवार, परिवार से समाज और समाज से देश अथवा राष्ट्र बनता है, जिसका शासक और नियामक एक राजा होता है। राजा भी नैतिक नियमों से बंधा होता है। नीति के प्रादुर्भाव का इतिहास सृष्टि से ही है। मनीषियों से हमें नैतिक आचरण की परम्परा प्राप्त हुई है। मनीषीजनों के अनुभवों का हम यही लाभ उठाए तो हमें हर समस्या का समाधान मिल जाता है। हमारे वेद नैतिक आचरण के मूल स्रोत हैं। हमें उनमें मनुष्य, देश, परिवार तथा समाज के सुखी होने की उच्च विचारधारा का प्रवाह मिलता है, जैसे **अनुव्रतः पितुः** - पुत्र-पुत्र पिता का अनुवर्ती। **मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्**- भाई भाई से द्वेष न रखें।

अतिथि देवो भव- अतिथि देवता के समान होता है। अतिथि की सेवा करो। **सं गच्छध्वं सं वदध्वम्** - मिलकर चलो, मिलकर बोलो। इसी प्रकार वेद की ऋचाओं में नीति के सुंदर उपदेश व्याप्त है। जैसे **असतो मा सद्‌गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, सह नाववतु सहनो भुनक्तु, माताः भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः** - भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ। जैसी हितैषी धरोहर में थाती में प्राप्त है। संस्कृत साहित्य में नैतिक आचरण की मंदाकिनी बहती है। आवश्यकता है इसको पठन-मनन करने की और आचरण में लाने की ताकि हमारी नीति आचार परम्परा कायम रह सके।

- ऋषि कुमार आर्य, टाटीबन्ध रायपुर

गवेषणात्मक यज्ञदेश, यज्ञशाला, यज्ञकुण्ड, यज्ञपात्र, घी, सामग्री एवं समिधा कैसी हो !

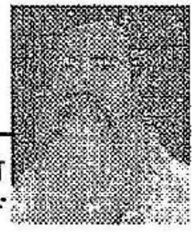

- महात्मा चैतन्यस्वामी

महर्षि दयानन्द जी के अनुसार (संस्कारविधि, सामान्य, प्रकरण) यज्ञ का देश पवित्र अर्थात् जहां स्थल वायु शुद्ध हो, किसी प्रकार का उपद्रव न हो। यज्ञशाला के सम्बन्ध में लिखते हैं : इसी को यज्ञमण्डप भी कहते है। यह अधिक से अधिक १६ हाथ सम चौरस चौकोण और न्यून से न्यून ८ आठ हाथ की हो। यदि भूमि अशुद्ध हो, तो यज्ञशाला की पृथिवी और जितनी गहरी वेदी बनानी हो, उतनी पृथिवी दो-दो हाथ खोद अशुद्ध (मिट्टी) निकालकर उसमें शुद्ध मिट्टी भरे। यदि १६ सोलह हाथ की सम चौरस हो तो चारों ओर २० खम्भे और जो ८ आठ हाथ की हो तो १२ खम्भे लगाकर उनपर छाया करें। वह छाया की छत्त वेदी की मेखला से १० दस हाथ ऊंची अवश्य होवे और यज्ञशाला के चारों दिशा में द्वार रखें और यज्ञशाला के चारों ओर ध्वजा, पताका, पल्लव आदि बांधे। नित्य मार्जन तथा गोमय से लेपन करें और कुमकुम हल्दी मैदी की रेखाओं से सुभूषित किया करें ... यज्ञ कुण्ड का परिमाण वे इस प्रकार बताते हैं - 'जो लक्ष आहुति करनी हों, तो चार-चार हाथ का चारों ओर सम चौरस कुण्ड ऊपर और उतना ही गहिरा और चतुर्थांशं नीचे, अर्थात् तले में १ एक हाथ चौकोण लम्बा-चौड़ा रहे। इसी प्रकार जितनी आहुति करनी हों, उतना की गहिरा-चौड़ा कुण्ड बनाना। परन्तु अनेक आहुतियों में दो-दो हाथ (अधिक) अर्थात दो लक्ष आहुतियों में छः हस्त परिमाफ का चौड़ा और सम चौरस कुण्ड बनाना। जो पचास हजार आहुति देनी हों, तो एक हाथ घटावे, अर्थात तीन हाथ गहरा-चौड़ा सम चौरस और पौन हाथ नीचे। तथा पच्चीस हजार आहुति देनी हो तो दो हाथ चौड़ा-गहिरा सम चौरस और आध हाथ नीचे। दस हजार आहुति तक इतना ही, अर्थात् दो हाथ चौड़ा-गहिरा सम चौरस और आधा हाथ नीचे रखना। पांच हजार आहुति तक डेढ़ हाथ चौड़ा-गहिरा सम चौरस और साढ़े आठ अंगुल नीचे रहे। यज्ञ कुण्ड का परिमाण विशेष आहुति का है। यदि इसमें २५०० ढाई हजार आहुति मोहन-भोग खीर और २५०० ढाई हजार घृत की देवे, तो दो ही हाथ का चौड़ा-गहिरा सम चौरस और आध हाथ नीचे कुण्ड रखे। चाहे घृत की हजार आहुति देनी हो, तथापि सवा हाथ से न्यून चौड़ा-गहिरा सम चौरस और चतुर्थांश नीचे न बनावे और इन कुण्डों में १५ पंद्रह अंगुल की मेखला अर्थात पांच-पांच अंगुल की ऊंची ३ बनावे और ये तीन मेखला यज्ञशाला की भूमि के तले से ऊपर करनी। प्रथम पांच अंगुल ऊंची और पांच अंगुल चौड़ी, इसी प्रकार दूसरी और तीसरी मेखला बनावें। प्रतिदिन के यज्ञ के लिए सत्यार्थ प्रकाश में कुण्ड का परिमाण लिखा है - एक किसी धातु वा मट्टी की ऊपर १२ वा १६ अंगुल चौकोर, उतनी ही गहरी और नीचे २ वा ४ अंगुल परिमाप से वेदी इस प्रकार बनावें अर्थात् ऊपर जितनी चौड़ी हो उसकी चतुर्थांश नीचे चौड़ी हो।'

वास्तव में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस प्रकार से यज्ञकुण्ड, सामग्री व समिधा आदि का उल्लेख किया है उसके पीछे गुणवत्ता और वैज्ञानिकता का समन्वय है। महर्षि जी ने जो भेदन-क्रिया का उल्लेख कि.या है उसी के आधार पर यज्ञकुण्ड का निर्माण किया है। इस प्रकार का यज्ञकुण्ड कम समिधा जलाने पर भी अधिक गर्मी पैदा करता है। इसमें समिधाओं को इस प्रकार रखा जाता है कि वायु का प्रवेश न तो एकदम अधिक और न ही बहुत कम हो जाए। यज्ञ कुण्ड की बनावट तथा समिधाओं के चयन करने की विधि हवन के लिए वांछित एवं आवश्यक गर्मी पैदा कर देती है। यज्ञकुण्ड के नीचे के भाग में लगभग ३०० सैल्सियस तापांश रहता है। ज्वालाओं के ऊपर तापांश १३०० सैल्सियस तक पहुंच जाता है। शेष भाग में भिन्न-

भिन्न स्थान पर अलग-अलग तापांश होता है। अग्नि के कुछ धीमी हो जाने पर तापांश २५० से ६०० सैल्सियस तक रह जाता है। हवन के लिए गर्मी की यह मात्रा भी पर्याप्त है। कार्य प्रारंभ होने के पश्चात् शेष सभी रासायनिक क्रियाएं इस तापांश पर सुविधापूर्वक पूर्ण हो जाती है... यज्ञपात्रों के सम्बन्ध में महर्षि जी का कहना है (स.वि.सामान्य प्र.) कि विशेषकर चांदी, सोना अथवा काष्ठ के होने चाहिए। महर्षि दयानन्द जी के अनुसार सुगंधित एवं सुसंस्कृत घी ही यज्ञ में प्रयोग किया जाना चाहिए। पंचमहायज्ञ-विधि में वे लिखते है - 'घृत को गर्म कर छान लेवे और एक सेर घी में एक रत्ती कस्तूरी, एक मास केशर पीस के.... मिलाकर पात्र में रख छोड़ें, संस्कार विधि में वे लिखते है - 'घृतादि जो कि उष्ण कर, छान पूर्वोक्त सुगन्ध्यादि सुगंध मिलाया हो.... सेरभर घी में एक रत्ती कस्तूरी, एक मासा केशर, एक-एक मन घी के साथ सेर-सेर भर अगर, तगर और घृत में चन्दन का चूरा भी यथाशक्ति डाल....'।

अपने ग्रन्थ ऋ.भा.भू. में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते है - 'चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है - एक सुगन्धगुणयुक्त जो कस्तूरी है, दूसरा मिष्टगुणयुक्त, जो कि गुड़ और सहत आदि कहाते है, तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त जो घृत, दुग्ध और अन्न आदि है और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलता औषधि आदि है। इन चारों का परस्पर शोधन,, संस्कार और यथायोग्य मिलाके अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है, वह वायु और वृष्टि की शुद्धि करने वाला होता है।' उसी ग्रन्थ में वे पुनः लिखते हैं - **'समिधाग्नि दुवस्यतघृतैर्वो-धयतातिथिम्। आस्मिनहव्या जुहोतन।** (यजु. ३-१) (समिधाग्नि...) हे मनुष्यों! तुम लोग वायु, औषधि और वर्षाजल की शुद्धि से सबके उपकार के अर्थात् घृतादि शुद्ध वस्तुओं और समिधा अर्थात् आम्र वा ढाक आदि काष्ठों से अतिथि रुप अग्नि को नित्य प्रकाशमान करो। फिर उस अग्नि में होम करने योग्य पुष्ट, मधुर, सुगंधित अर्थात् दुग्ध, घृत, शर्करा, गुड़, केसर, कस्तूरी आदि और रोगनाशक जो सोमलता आदि सब प्रकार से शुद्ध द्रव्य है, उनका अच्छी प्रकार नित्य अग्निहोत्र करके सबका उपकार करो। संस्कारविधि में सुगंधित, पुष्टिकारक, रोगनाशक और मिष्ठ इन चार प्रकार की सामग्रियों का इस प्रकार विधान किया है - सुगन्धित-कस्तूरी, केसर, अगर, तगर, श्वेत चन्दन, इलायची, जायफल, जावीत्री आदि। पुष्टिकारक- घृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूं, उड़द आदि। रोगनाशक-सोमलता अर्थात् गिलोय आदि औषधियां। मिष्ट-शक्कर, शहद, छुहारे, दाख आदि। वेद (यजु. १९-२१) में कुछ यज्ञ की सामग्रियों का वर्णन मिलता है जो इस प्रकार है - धान, करंभ, सक्तु, परीवाप, पय, दधि, अमिक्षा, अन्न और मधु। ये सौत्रामणि याग की सामग्री है। सौत्रामणि याग का वर्णन शतपथ (१२-७) में और कात्यायन श्रोतसूत्र की १६वीं कण्डिका में किया गया है। इसी सौत्रामणि के प्रकरण में 'मासर' और 'नग्नहु' का वर्णन भी यजुर्वेद में पाया जाता है। कर्कन्धुचूर्ण का भी वर्णन मिलता है। विरूढ़ ब्रीहि धान शष्प है। विरुद यवों को तोक्म कहा जाता है। भूने हुए धान को लाजा कहते हैं। सर्ज का छाल, त्रिफला, शुण्ठी, पुनर्नवा, चातुर्जातक, पिप्पली, राजपिप्पली, वंशावका, वृहच्छत्रा, चित्रका, इन्द्रवारूणी, अश्वगन्धा, धात्यक, यवानी, दोनों जीरा, दोनों हरिद्रा, विरूढ़ यव और ब्रीहि एक कर देने पर 'नग्नहु' कहलाते हैं .... मुख्यतः सामग्री में जिन वस्तुओं का प्रयोग करने के लिए कहा गया है उसके पीछे भी यहीं भाव है कि अग्नि में जलने से इन पदार्थों से उत्तम लाभ प्राप्त हो... आयुर्वेद के आधार पर इन पदार्थों के अद्भुत लाभ बताए गए हैं ....

उपरोक्त के आधार पर अनेक ग्रन्थों में विद्वानों ने अलग-अलग ऋतुओं के लिए सामग्री का विधान किया है। यहां पर हम 'यज्ञ-विमर्श' पुस्तक के अनुसार - नीचे ऋत्वनुकूल यज्ञ-सामग्री का एक योग दे रहे हैं। इस आध किलो सामग्री में ११० ग्राम बूरा या खांड एवं ७५ ग्राम गोघृत मिला देना चाहिए।

बसन्त ऋतु (चैत्र, बैशाखः :- केसर (१ ग्राम), जावित्री (३ ग्राम), लज्जावती (६ ग्राम), अगर, दालचीनी, चिरायता, खस, तगर, तीलीसपत्र, छरीला, पत्रज, इन्द्रजौ,

जायफल, कमलगट्टा, मजीठ, कपूरकचरी, गाखरू (प्रत्येक १५ ग्राम), कपूर (२० ग्राम), दाख, देवदार, गिलोय, गूगल, गूलर की छाल (प्रत्येक ४० ग्राम), चन्दन लाल, पीला, सफेद (४५ ग्राम)।

ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ, आषाढ़) :- केसर (१ ग्राम), नागरमोथा, पीला व लाल चन्दन, बायबडिंग, छरीला, शतावरी, गिलोय, लौंग, दालचीनी, निर्मली, तगर, तालीपत्र, मजीठ, शिलारस, आंवला, बड़ी इलायची, बालछड़, उन्नाव, दारूहल्दी, पद्माख (प्रत्येक १५ ग्राम), कपूर (२० ग्राम), चिरौंजी, गुलसुर्ख (प्रत्येक ३५ ग्राम), मूंग, चावल (प्रत्येक ३७ ग्राम)।

वर्षा ऋतु (श्रावण, भाद्रपद):- बेल (२ ग्राम), संखाहली, छोटी इलायची (प्रत्येक ६ ग्राम), काला अगर, तगर, इन्द्रजौ, जायफल, तेजपत्र, कपूर, गिलोय, तुलसी के पत्ते व बीज, नागकेसर, बायबडिंग, चिरायता, मोचरस, कपूर कचरी, ब्राम्ही (प्रत्येक १२ ग्राम), उड़द, जौ (प्रत्येक २४ ग्राम), गुग्गल, देवदार, राल, गोला, बालछड़, बच, श्वेत चन्दन का चूरा, छुहारे, नीम के पत्ते (प्रत्येक ३० ग्राम)

शरद ऋतु (आश्विन, कार्तिक) :- केसर (१ ग्राम), जायफल (११ ग्राम), ब्राम्ही, पीला व लाल चन्दन, गिलोय, बड़ी इलायची, नागकेसर, पितपापड़ा, मोचरस, दालचीनी, अगर, इन्द्रजौ, भारंगी, असगन्ध, शीतल चीनी, पत्रज, चिरायता, सहदेई, धान की खील, तालमखाना (प्रत्येक १२ ग्राम), कपूर (२० ग्राम), बालछड़, गूलर की छाल, कपूर कचरी, गुग्गल, श्वेत चन्दन, किशमिश (प्रत्येक २० ग्राम), चिरौंची (६० ग्राम)।

हेमन्त ऋतु (मार्गशीर्ष, पौष) :- केसर (२ ग्राम), रासना, मुश्कबाला, कौच के बीज (प्रत्येक ६ ग्राम), काली मूसली, मूलहठी, जावित्री, तालीसपत्र, लाल चन्दन, पटोल पत्र, पित्तापापड़ा, कूट, कपूर, सौंफ, भारंगी, गिलोय, दालचीनी, पुष्करमूल, गोखरू, बादाम (प्रत्येक १५ ग्राम), देवदार, मुनक्का (प्रत्येक २० ग्राम), अखरोट की गिरी, कपूर कचरी (प्रत्येक २५ ग्राम), गुग्गल, छुहारे, काले तिल, गोला, तुम्बरू (प्रत्येक ३० ग्राम)।

शिशिर ऋतु (माघ, फाल्गुन) :- केसर (१ ग्राम), शंखपुष्पी, कौच के बीज, भोजपत्र, रेणुका (प्रत्येक ६ ग्राम), कपूर, बायबडिंग बड़ी इलायची, मोचरस, मुलहठी, गिलोय, तज, चिरायता, तुलसी के बीज व पत्ते, चिरौंजी, काकड़ासींगी, दारू, हल्दी, शतावरी, पद्माख, सुपारी (प्रत्येक १५ ग्राम), छुहारे, अखरोट, चन्दन (प्रत्येक २५ ग्राम), राल, तुम्बरू, नालछड़, गुग्गल, मुनक्का (प्रत्येक ३५ ग्राम)।

आम और ढाक के अतिरिक्त महर्षि जी (सं.वि.) पलाश, शमी, पीपल, बड़, गूलर और बिल्व की समिधाओं का विधान भी किया है। (यजुर्वेद १७-१९) में जिन सात समिधाओं की चर्चा की गई है, वे आम्र, विल्व, पीपड़, बड़, उदुम्बर, पलाश और खादिर है। श.पथ. (१-३-३-२०) में ढाक, फल्गु, वट, पीपल, विकंकत (वंज), गूलर, चन्दन, देवदारू, शाल व खैर आदि समिधाओं का विधान किया गया है। वायु पुराण में ढाक, काकप्रिय, बड़, पिल्खन, पीपल, विकंकल, गूलर, बेल, चन्दन, पीतादारू, शाल, खैर आदि को यज्ञोपयोगी माना गया है। समिधाओं का चयन भी गुणवत्ता के आधार पर ही किया गया है। 'यज्ञ-विमर्श' में कुछ समिधाओं के गुण इस प्रकार बताए है - 'ढाक (पलाश - Butea frondosa) की समिधा सुविधा से जलती है। अग्निदीपक और वीर्यवर्द्धक है। गुदा के रोग, संग्रहणि तथा कृमिनाशक है। भावप्रकाश के अनुसार ढाक के बीजों को शहद में मिलाकर आंत के कीड़े निकालने की औषधि बनाई जाती है। इसके पत्ते फोड़े-फुन्सियों को नष्ट करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। पीपल (पिप्पल- Ficus religiosa) पवित्र माना जाता है। यह दाह, कफ, पित्त, विष तथा रक्तविकार नाशक है। इसके बीजों का चूर्ण श्वास-रोग में लाभदायक है। बड़ (वट Ficus bengalensis) शीतल, भारी तथा कसैला होता है। कफ, पित्त, वमन एवं ज्वर में लाभदायक है। कान्ति बढ़ाता है। इसका दूध अत्यन्त बलवर्द्धक है। इसके दूध को बताशे में रखकर सेवन करने से प्रमेह रोग दूर हो जाता है। गूलर (उदुम्बर, हेमदुग्धक Ficus glomerata) कफ, पित्त तथा रक्तविकार को ठीक करता है। हड्डी को जोड़ने वाला

तथा वर्ण को उत्तम करने वाला है। आम (आम्र Mangifera indica) का बौर शीतल तथा रूचिकारक है। यह कफ, पित्त, रक्तविकार तथा प्रमेह का नाश करता है। इसके पत्तों का धुआं कुक्कुर खांसी को नष्ट करता है। युनानी मतानुसार आम की छाल रक्तस्राव को बन्द करने वाली, वमन और अतिसार नाशक है। चन्दन (Santalum album) सर्वोत्तम चन्दन देखने में ऊपर से सफेद, गांठदार, काटने में लाल, पीसने में पीला तथा स्वाद में कड़वा होता है। यह कफ, तृषा, पित्त, रूधिरविकार और दाहनाशक है। चन्दन की लकड़ी के बने हुए सन्दूकों में रखी हुई वस्तुओं को कीड़ा नहीं लगता। यज्ञ में प्रायः इसका चूरा ही डाला जाता है। सफेद चन्दन का तेल सुजाक (आतशक) में लाभदायक है। अतः यज्ञ में प्रयोग की जाने वाली समिधाएं अत्यन्त गुणशाली है। विभिन्न रोगों का नाश करती है। इसलिए जहां लकड़ी जलने पर गर्मी उत्पन्न करती है, वहां कई लाभदायक पदार्थ भी बनाती है।

पता - महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.) १७५०१८

शूद्र वर्ण

जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि व मूर्ख होने से शारीरिक श्रम द्वारा उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा और सहायता करने के लिए शूद्र है। यह वर्ण गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर होते हैं, जन्म के आधार पर नहीं, भाव के समान रुप से विद्या प्राप्त करने का अधिकारी मानता है और विद्यालय में पढ़ाई की समाप्ति पर जिस-जिस विद्यार्थी का जो-जो वर्ण उनकी योग्यतानुसार उनका आचार्य निश्चित करे, वह-वह उनका 'वर्ण' मानता है, चाहे उनके पिता का कुछ भी वर्ण हो। धर्माचरण से नीच वर्ण उच्च वर्ण को और धर्माचरण से उच्च वर्ण नीच वर्ण को प्राप्त हो सकता है।

हमको फिर से जगा गया ऋषिवर

हमको फिर से जगा गया ऋषिवर,
खुद को तिल-तिल जला गया ऋषिवर।
जग का उपकार उसे करना था,
इसलिये विष भी खा गया ऋषिवर।
दे के वेदों का फिर से ज्ञान हमें,
सच्चा रास्ता दिखा गया ऋषिवर।
ढोंग-पाखण्ड जो कराते थे,
उनपे बिजली गिरा गया ऋषिवर।
नारियों को समझते थे जूती,
उनको देवी बना गया ऋषिवर।
विधवाओं की दशा पै रोता था,
ब्याह फिर से करा गया ऋषिवर।
यहां दलितों से भेद-भाव हुआ,
उनको भाई बता गया ऋषिवर।
जो विधर्मी हुए मेरे भाई,
फिर से आर्य बना गया ऋषिवर।
करने आजाद अपने भारत को,
आग दिल में जला गया ऋषिवर।
सच की रक्षा के लिए जीता रहा,
दे के सत्यार्थ छा गया ऋषिवर।
फिर से बतला के देश का गौरव,
गर्व खुद पर सिखा गया ऋषिवर।
पा के ईश्वर को मुक्त होने को,
मोक्ष का पथ दिखा गया ऋषिवर।
अस्त होकर के दीवाली के दिन,
लाखों दीपक जला गया ऋषिवर।
ले के ईश्वर का नाम जीता रहा,
उसमें "रोहित" समा गया ऋषिवर।।

०-०

- रोहित आर्य, आर्यसमाज मिंटो रोड, डीडीयू मार्ग, बीजेपी आफिस के सामने, नई दिल्ली-02

प्रत्यावर्त्तन

कैसा हो हमारा नया साल

- विनोद बंसल

इकतीस दिसम्बर के नजदीक आते ही जगह-जगह जश्न मनाने की तैयारी प्रारम्भ हो जाती हैं। होटल, रेस्तरां, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। हैप्पी न्यू ईयर के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डों के साथ दारू की दुकानें की भी चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाएँ दुर्घटनाओं में बदल जाती है और मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियां गाड़ियों से भिड़ने लगते हैं। रात-रात भर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियां एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृति मर्यादाओं को तिलांजलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया ?

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीज द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने १७५२ में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। १७५२ से पहले ईस्वी सन् २५ मार्च से शुरु होता था किन्तु १८वीं सदी से इसकी शुरुआत एक जनवरी से होने लगी। ईस्वी कलेण्डर के महीनों के नाम में प्रथम छः माह यानि जनवरी से जून रोमन देवताओं (जोनस, मार्स व मया इत्यादि) के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उनके पौत्र अगस्टम के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोम संवत् के मासों के आधार पर रखे गये। जुलाई और अघस्त क्योंकि सम्राटों के नाम पर थे इसलिए दोनों ही इकतीन दिनों के माने गये अन्यथा कोई भी दो मास ३१ दिनों या लगातार बराबर दिनों की संख्या वाले नहीं है।

ईसा से ७५३ वर्ष पहले रोम नगर की स्थापना के समय रोमन संवत् प्रारम्भ हुआ जिसके मात्र दस माह व ३०४ दिन होते थे। इसके ३३ साल बाद वहां के सम्राट नूमा पाम्पीसियस ने जनवरी और फरवरी दो माह और जोड़कर इसे ३५५ दिनों का बना दिया। ईसा के जन्म से ४६ वर्ष पहले जूलियस सीजर ने इसे ३६५ दिन का बना दिया। सन् १५८२ ई. में पोप ग्रेगरी ने आदेश जारी किया कि इस मास के ०४ अक्टूबर को इस वर्ष का १४ अक्टूबर समझा जाये। आखिर क्या आधार है इस काल गणना क्या ? यह तो ग्रहां व नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होनी चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर १९५२ में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद के द्वारा पंचाज सुधार समिति की स्थापना की गयी। समिति ने १९५५ में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी। किन्तु, तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के आग्रह पर ग्रेगेरियन कलेण्डर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर २२ मार्च १९५७ को इस राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया। ग्रेगेरियन कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना ३५८१ वर्ष, रोम की वर्ष यहूदी, मिस्र की, पारसी तथा चीन की वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब ९७ करोड़, ३९ लाख, ४९ हजार वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है। जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति,

खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से हैं। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नही, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नवसंवत् यानि संवत्सरों से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और अनेक सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं। और तो और देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचाग पर आधारित होता है।

भारतीय समयानुसार कोई भी काम यदि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जाये तो उसकी सफलता में चार चांद लग जाते हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एख सही दिशा प्रदान करते हैं उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देशप्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नववर्ष प्रारम्भ होता है। आइये इस दिन की महानता के प्रसंगों को देखते हैं -

ऐतिहास महत्व :-

१. आज से एक अरब ९७ करोड़, ३९ लाख ४९ हजार वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारंभ की।

२. प्रभु श्रीराम चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य व धर्म राज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

३. शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है।

४. प्रभु राम के जन्म दिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन का श्रीराम महोत्सव मनाने का प्रथम दिन।

५. आर्यसमाज स्थापना दिवस, सिख परम्परा के द्वितीय गुरु अंगददेव जी, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव राम बलीराम हैडगेवार का जन्म दिवस।

प्राकृतिक महत्व –

१. बसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

२. फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

३. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये शुभ मुहूर्त होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग उठ सके ? आइये ! विदेशी को फैंक स्वदेशी अपनाएं और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनायें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

पता : ३२९, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

संसार में ईश्वर के बाद यदि कोई पूजनीय है तो वह है पहले माता और फिर पिता।

माता का स्थान पिता से ऊँचा होता है।

कटु वचन सीधे हृदय पर चोट करते है। कटु वचन को क्षमा तो किया जा सकता है पर भुलाया नहीं जा सकता।

ऐतिहासिक

"सार्वदेशिक सभा के जन्म और विकास का इतिहास"

- मनमोहन कुमार आर्य

लेखक आर्यसमाज के दीवाने हैं, निरन्तर ऋषि के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं, समय-समय पर समाजोत्कर्ष के बिन्दुओं को भी उभारते हैं, प्रस्तुत लेख में व्यथित मन की पीड़ा वस्तुतः शोचनीय है। - सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली आर्यों का एक सार्वभौम संगठन है। देश की सभी प्रान्तीय सभायें इसी सभा के अन्तर्गत आती हैं। इस सभा का संगठन प्रदेसों की सभाओं के प्रतिनिधियों से निर्मित होता है। इसकी रचना व जन्म का इतिहास इस गुरुकुल कांगड़ी के एक पुराने स्नातक पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी द्वारा प्रस्तुत शब्दों में दे रहे हैं। श्री सत्यदेव विद्यालंकार एक प्रसिद्ध पत्रकार, साहित्यकार एवं देश की आजादी के आन्दोलन के सेनानी थे। इस सभा की स्थापना में स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रमख भूमिका थी। हम आशा करते हैं कि पाठक सार्वदेशिक सभा की स्थापना से जुड़े प्रसंगों को जानकर ज्ञान लाभ करेंगे। हो सकता है कि आपमें से इस सभा की रक्षा के लिए भावनायें उत्पन्न हों और आप सभा के गौरवपूर्ण अतीत के अनुरुप भविष्य का इतिहास बनाने में कुछ विचार देने के साथ सार्थक प्रयास भी करें। पं. सत्यदेव विद्यलंकार जी के शब्द निम्नानुसार है -

जिस आर्य सार्वदेशिक सभा को इस समय सार्वभौम अथवा इण्टरनेशनल आर्यन लीग का नाम दिया जा रहा है, उसको जन्म देने वाला महात्मा मुंशीराम ही थे। सम्वत् १८९९ में आप जब गुरुकुल के लिए तीस हजार रुपया जमा करने को दौरे पर निकले हुए थे, तब ही आपने उसके संगठन की नियमावली बनाकर उसके लिए आन्दोलन भी शुरु कर दिया था। उस समय आपका यह भी विचार था कि गुरुकुल की स्थापना उसी की आधीनता में होनी चाहिए। प्रान्तीय आर्य नेताओं को इस सार्वभौम संगठन की संभवतः इतनी आवश्यकता नहीं जंच रही थी, जितना कि महात्मा जी उसके लिए आन्दोलन कर रहे थे। पंजाब प्रतिनिधि सभा ने २४ जनवरी १८९७ को सार्वदेशिक सभा की स्थापना के सम्बन्ध में प्रस्ताव पारित किया था। उसके एक मास बाद संयुक्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा ने और कोई ६ मास बाद मई महीने में राजस्थान प्रतिनिधि सभा ने भी उसकी स्थापना के संबंध में प्रस्ताव पारित किये थे। इन प्रस्तावों के पारित हो जाने के बाद निरन्तर आन्दोलन होने पर भी संवत १९६५ (सन् १९०८) से पहिले इस सभा की नियमपूर्वक स्थापना नहीं हो सकी थी। सम्वत् १९६४ के पौष मास में महात्मा जी ने एक लेख आर्य सार्वदेशिक सभी की आवश्यकता शीर्षक से अपने पत्र **सद्धर्म प्रचारक** में लिखा था। उस लेख से सार्वदेशिक सभा के प्रति आर्य नेताओं की उदासीनता के साथ-साथ यह भी पता लगता है कि आपके पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनने से पहले आर्यसमाज के संगठन की क्या अवस्था थी? आपने लिखा है - "कोई समय था, जबकि आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब दयानन्द कालेज का केवल पुछल्ला थी। लाहौर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर जब दयानन्द कालेज प्रबन्धकर्ता सभा का सब काम हो चुकता था, तब खड़े-खड़े एक प्रस्ताव पारित हुआ करता था, जिसका नमूना आज के आर्यों को आश्चर्य में डाल देगा। प्रस्ताव निम्न प्रकार का होता था, सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि अमुक-अमुक महाशय अंतरंग सभा के सभासद् नियत किये जायें तथा लाला साईदास जी प्रधान, लाला मुरलीधर जी मंत्री तथा लाला जीवनदास जी कोषाध्यक्ष नियत है। सन् १८९० ईस्वी तक इसी प्रकार का सिक्खों वाला सवा लक्ख प्रस्ताव देखने में आया। सन्

१८९१ में कुछ हलचलें हुईं और सन् १८९२ में तो काया ही पलट हो गई।"

यही समय था, जब पंजाब में गृह कलह का सूत्रपात हुआ था और उसके प्रधान निर्वाचित हुए थे। इस प्रकार पंजाब प्रतिनिधि सभा के संगठित होने का प्रभाव दूसरे प्रान्तों की प्रतिनिधि सभाओं पर भी पड़ा और उनमें भी जीवन का संचार हुआ। इसी लेख में आगे आपने लिखा था - "जबसे इन सब सभाओं में जान पड़ने लगी थी, तब से ही मैं सारे भारतवर्ष के लिए एक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आवश्यकता को अनुभव करता था। मेरी दृष्टि की सीमा उस समय बढ़ चुकी थी और मुझे वह दिन दूर नहीं दिखाई देता था, जबकि अन्य देशों में भी वैदिक धर्म का डंका बज कर आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना होना भी दुस्साध्य नहीं प्रतीत होता था। ऐसी आशा से भरपूर हृदय से मैंने सार्वदेशिक सभा का प्रस्ताव किया था। इस प्रश्न को कभी पंजाब की सभा और कभी संयुक्त प्रान्त की सभा दोनों ही टालती रही। फिर नियम बनाने की रुकावट जतलाई गई। मैंने गुरुकुल के लिए भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए भी समय निकाला और नियम बना भेजे। इन नियमों पर आगरा समाज के उत्सव पर सन् १९०० के फरवरी मास में कुछ प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर विचार किया और उनके संशोधन का काम राजस्थान वालों पर छोड़ा गया। इस संशोधन के काम में ही आठ-नौ वर्ष बीत गये और १९०८ में गुरुकुल कांगड़ी के छठे वार्षिकोत्सव और आगरा में जुलाई मास में फिर इकट्ठा होने का निश्चंय किया गया। जुलाई में तो नहीं २५ सितम्बर १९०८ को आगरा में फिर सब प्रतिनिधि इकट्ठे हुए। उसमें नियमादि सब निश्चित कर लिये गये।" नियमानुसार सभा का प्रथम अधिवेशन प्रथम वैशाख सम्वत् १९६६ को देहली में हुआ। इस अधिवेशन में महात्मा मुंशीराम जी उसके प्रधान निर्वाचित हुए और जीवनपर्यन्त सदा आप ही उसके प्रधान चुने जाते रहे।

सार्वदेशिक सभा की स्थापना के इस इतिहास से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं। एक तो यह कि आर्यसमाज के उस सब संगठन की इमारत के, जो इस समय इतनी भव्य दीख पड़ती है, बनाने वाले महात्मा मुंशीराम जी ही थे। दूसरी यह कि आप बड़े-बड़े शब्दों के पीछे भागते हुए असलियत को आंखों से ओझल नहीं करते थे। क्या मुंशीराम जी सार्वदेशिक सभा को सार्वभौम या इण्टरनेशनल नाम नहीं दे सकते थे? दे सकते थे, परन्तु उसके लिए अभी समय नहीं आया था। पीछे छोड़ आगे दौड़ की नीति आपको पसन्द नहीं थी। आप नीचे की नींव दृढ़ करने के बाद ही ऊपर की दीवार खड़ी करते थे। इस प्रकार आपके कई वर्षों के निरन्तर आन्दोलन के बाद सार्वदेशिक सभा की स्थापना हुई और उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करने का काम भी आपको ही करना पड़ा। देहली में उसके कार्यालय (सभा भवन) की स्थिर स्थापना की गई। कुम्भ प्रचार का काम उसकी आधीनता में किया जाने लगा और संन्यासाश्रम में प्रवेश के बाद अपना अधिक समय उसमें लगा कर आपने ही मद्रास प्रान्त में प्रचार की स्थिर नींव डाली। सम्वत् १९६६ में पंजाब के दोनों दलों को एक करने का आन्दोलन करते हुए आपने गुरुकुल कांगड़ी सरीखी सभी संस्थाओं को इस सभा के ही आधीन करने का प्रस्ताव किया था। उक्त सभा और आर्यसमाज के सम्बन्ध में आपकी महत्वाकांक्षा कितनी महान् और ऊंची थी, इसका पता आपके जिस लेख में मिलता है, वह आपने सम्वत् १९६६ में लिखा था।

उसकी कुछ पंक्तियां ये हैं - "यदि यह सारा काम सार्वदेशिक सभा के आधीन हो जाये, तो जहां एक केन्द्र महाविद्यालय दृढ़ हो सकता है, वहां प्रत्येक प्रान्त में तथा शनैः शनैः प्रत्येक नगर वा ग्राम के समीप अनगिनत शाखा गुरुकुल खुल सकते हैं और वह समय भी हमारी समझ में आ सकता है, जबकि एक गुरुकुल विश्वविद्यालय स्थापित हो सके और सारे भूगोल के मनुष्य आत्मविद्या सीखने तथा अपने चरित्र सुधारने के लिए फिर से इस पवित्र भूमि में आना आरम्भ करें। मेरा यह विचार इस समय एक भ्रान्त चित्त की बड़बड़ से बढ़ कर प्रतीत न होगा, किन्तु मेरा निश्चय है कि जब तक साधारण पुरुषों की दृष्टि में असंभव उच्च विचारों को लक्ष्य में रखकर काम नहीं किया जाता, तब तक आदर्श की ऊंची चोटी पर चढ़ना कठिन है। मेरी

दृष्टि के सामने तो वह दिन भी घूम रहा है, जब आर्यसमाज की संचित शक्ति से प्रेरित सच्चे संन्यासी ओ३म् के झण्डे को अमेरिका तथा यूरोप के ऊंचे से ऊंचे गर्वनमेंट हाऊस की सबसे ऊंची चोटियों पर, तोप और तलवार की सहायता के बिना ही स्थापित कर देंगे।"

आज आर्यसमाज को अपने जीवन की प्रगति का प्रवाह रुका हुआ दीख पड़ता है। उसका कारण यही है कि उसमें उतनी ऊंची और महान् महत्वाकांक्षा रखने वाले ऐसे नेता का अभाव है, जो उसके लिए सच्चे पथ प्रदर्शक का काम कर सके। ऐसे नेता घड़े नहीं जाते, स्वयं ही पैदा होते हैं। निश्चय ही महात्मा मुंशीराम जी उन महापुरुषों में से थे जाति अथवा समाज का नेतृत्व कर उसको घोर निराशा, घने अन्धकार और भयानक संकट से पार लगा कर सदा आगे ही आगे का रास्ता दिखाने के लिए पैदा होते हैं। यहां पर पं. सत्यदेव विद्यलंकार जी लिखित शब्द समाप्त होते हैं।

हमने यह विवरण पं. सत्यदेव विद्यालंकार की पुस्तक स्वामी श्रद्धानन्द से लिया है। इस उपादेय ग्रन्थ का नया संस्करण हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोन सिटी से सन् २०१८ में प्रकाशित हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा की स्थापना में कितना पुरुषार्थ किया था, यह उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है। आज सार्वदेशिक सभा व संगठन की जो दुःखद स्थिति है वह किसी से छुपी नहीं है। वर्षों से न्यायालय में मुकदमें चल रहे हैं। आर्यसमाज का कोई एक सर्वमान्य नेता नहीं है। दोनों पक्ष यदा-कदा सम्मेलन व महासम्मेलन कर लेते हैं, परन्तु इससे कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आते। देश में आजादी के बाद से आर्यों व हिन्दुओं की जनसंख्या निरन्तर घट रही है। अनेक गांवों, कस्बों, नगरों व राज्यों में आर्य व हिन्दू अल्पसंख्यक होते जा रहे हैं। उनके लिये सामान्य जीवन जीने में कठिनाईयां आ रही है परन्तु आर्यसमाज के नेताओं के पास इन समस्याओं पर विचार करने और कोई उपाय सुझाने व उसका प्रचार करने का समय नहीं है। देश और आर्यसमाज का भविष्य क्या है? इसका विचार कर भी चिन्ता होती है। ईश्वर से ही प्रार्थना है कि वह आर्यों व हिन्दू जाति को सद्बुद्धि दें और उनका मार्गदर्शन करें। आज यदि स्वामी श्रद्धानन्द होते तो वह कदापि चुप न बैठते। यदि वह मोक्ष में होंगे तो आर्यसमाज और सार्वदेशिक सभा की दशा देखकर अवश्य दुःखी होते होंगे, ऐसा हमें अनुभव होता है।

पता - १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

ब्रह्मचर्य का महत्व

शान्तिं कान्तिं स्मृतिं ज्ञानमारोग्यं चापि सन्ततिम्। यदिच्छति महद्धर्मं ब्रह्मचर्यं चरेदिह॥

(धनवन्तरि)

भावार्थ : बुद्धिमान पुरुषों के लिए उचित है कि - वह ब्रह्मचर्य का नियमित पालन करें। यदि आप अपने जीवन में सुख शान्ति चाहते हैं व संसार को कुछ देना चाहते हैं तो आपको ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य ही करना चाहिए। क्या आप संसार में शान्ति से श्रेष्ठातिश्रेष्ठ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं? आप चाहते हैं- कि आप तेजस्वी बनें? आपकी स्मृति, आपका ज्ञान आपका स्वास्थ्य सुविस्तृत हो, आपकी सन्तानें उत्तम हो तो आइए इस श्रेष्ठति श्रेष्ठ रूप ब्रह्मचर्य का पालन कीजिए। आप ब्रह्मचर्यरूपी महान् वटवृक्ष का आश्रय लीजिए, आप अनुभव करेंगे कि - आपके जीवन में कितनी सुख शान्ति है। ब्रह्मचर्य से तो मृत्यु भी दूर भागती है। इसके समान पवित्र वस्तु संसार में और कोई नहीं है। आप ब्रह्मचर्य के महत्व की प्राचीन कथाओं से अपरिचित हैं? भीष्मपितामह की मृत्यु तक टल गई थी। ब्रह्मचर्य से ही देवता लोग मृत्यु को जीत लेते थे। आज भी समाज में ब्रह्मचर्य का प्रताप देखा जा सकता है। ब्रह्मचारी का प्रभाव अक्षुण्ण होता है। ब्रह्मचर्य की महिमा पर तो बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। भला आप इसके महत्व से अपरिचित हैं?

- सुभाषित सौरभ

पर्व प्रेरणा

अनेक पर्वों का पुञ्ज : मकर संक्रांति पर्व

ले. मनुदेव 'अभय', विद्यावाचस्पति

वैदिक ऋषिगण परमात्मा की इस सृष्टि के द्यौः लोक अंतरिक्ष तथा इस पृथिवी लोक के रहस्यों को जानने का सदैव प्रयत्न करते थे। संध्या (ब्रह्म यज्ञ) के प्रसंग में अघमर्षण मंत्राः के अन्तर्गत ऋग्वेद १०/१९०/१-३ द्वारा सृष्टि उत्पत्ति का क्रमिक विकास इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि यह सृष्टि उद्देश्यपूर्ण है। कारण से कार्य होता है, अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती। प्रलय के पूर्व सृष्टि में विद्यमान जीवों को उनके कर्मों का फल देने के लिए तथा अन्य जीवों को मोक्षानन्द का अवसर देने, प्रेरणा देने आदि हेतुओं के कारण सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

२१वीं शताब्दी के विश्व के अनेक महान व्यक्ति 'वेद' को सर्वोच्च ज्ञान का पुस्तक स्वीकार कर विश्व के ग्रंथालय में शीर्षक्रम पर रखकर सम्मानित किया है। इससे मत-मतान्तर, पंथ, मजहब तथा समुदायों की कथित पुस्तकें स्वतः गौण स्थान पर आ गई। अब न तो चौथे दिन सूर्योदय हुआ और न पृथ्वी चटाई की तरह चपटी रह गई है अपितु भौतिक विज्ञान की नवीनतम खोजों और धारणाओं ने ऐसी कल्पित मान्यताों पर पूरी तरह पानी फेर दिया है।

इस सन्दर्भ में इतना ही कथन पर्याप्त है कि हम आर्यों ने सदैव प्रकृति से बड़ा प्रेम किया है तथा अन्तरिक्ष के साथ द्यौ लोक एवम् पृथ्वी पर शांति की प्रार्थना की है। प्रकृति के परिवर्तन से अपना पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन व्यवस्था में भी समयानुसार बदलाव किया है। मकर-संक्राति पर्व पर भी एक विशिष्ट परिवर्तन होता है। यद्यपि यह पर्व 'सविता' या सूर्य से संबंधित है। तद्नुसार आर्यों ने इसे एक पर्व के रूप में स्वीकार कर प्रकृति-प्रेम को प्रकट किया है।

मकर संक्रांति पर्व क्यों और कैसे ?

वेद और वर्तमान विज्ञान के अनुसार पृथवी सूर्य का चक्कर लगाते हुए २३.०५ पर झुकी रहते हुए अपने केन्द्र पर ही घूमती रहती है। अंतरिक्ष में जितने भी ग्रह-उपग्रह आदि हैं, वे सभी सूर्य से प्रकाशित है। चन्द्रमा एवं सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है। खगोलशास्त्र के ज्योतिषियों के अनुसार क्रांतिवृत्त के १२ नाम कल्पित किये गये हैं। उन १२ भागों पर विभिन्न आकृति वाले पदार्थों के नाम रखे गये हैं। जैसे मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन।

अयन अनुभाग : अक्षांश-देशान्तर रेखायें (कल्पित)

इसी प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी के गोलाकार भाग में पूर्व से पश्चिम ३ रेखायें भी कल्पित खींची गई है। पृथ्वी के बिलकुल बीचोंबीच में पूर्व से पश्चिम भू-मध्य रेखा (विषुवत रेखा) २३.१०.२, उत्तर में कर्क रेखा तथा दक्षिण में २३.१०.२४ पर मकर रेखा। इन्हें 'अयन' भी कहते हैं। जब सूर्य मकर रेखा को स्पर्श कर वापस लौटता है, तब प्रत्येक वर्ष की १४ जनवरी को मकर संक्रांति मनाई जाती है। तभी से दिन शनैः शनैः बड़े और रात छोटी होने लगती है। यह सब चेतन शक्ति द्वारा नियंत्रित है।

२२ दिसम्बर को सबसे छोटा दिन

प्राचीन काल से काल गणना के अनुसार सौर मंडल का मुखिया सूर्य प्रति वर्ष २२ दिसंबर को अधिकतम बिन्दु पर पहुंचकर मकर रेखा को स्पर्श करता है और विषुवत रेखा से २२ डिग्री २६ मिनट दक्षिण में रहकर फिर शनैः शनैः सूर्य उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगता है। इस प्रकार वर्ष में एक दिन २२ दिसंबर को छोटा दिन तथा राथ बड़ी होने की घटना को खगोल विज्ञान में विन्टरखोलस्टिक और ज्योतिष विज्ञान में मकर सायन कहा जाता है। यह सब परिवर्तन प्रकृति में व्याप्त तथा उस पर नियंत्रण करने वाली एक अदृश्य शक्ति द्वारा होता रहता है। ऋग्वेद के १०वें मण्डल के अन्तर्ग नासदीय सूक्तों में प्रलय, प्रकृति, सृष्टि रचना आदि का जिस प्रकार से बुद्धियुक्त वर्णन पाया जाता है, उसे पढ़कर आधुनिक वैज्ञानिक विशेष कर अमेरिका के 'नासा' के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित है. आज से दो अरब पूर्व भारतीय ऋषियों ने जो चिन्तन वेद के माध्यम से विश्व

के सम्मुख प्रस्तुत किया, वह प्रकृति के नियमानुसार बड़े ही रोचक-शैली में अभी भी उपलब्ध है। वेद स्वतः प्रमाण ग्रन्थ है और इनके पूर्ववर्ती ग्रन्थ परतः प्रमाण है।

सृष्टि की आत्मा सूर्य :-

चित्रन्देवानामुद्गादनीकं चक्षुर्मित्रस्व
वरुण्यस्याग्ने आ प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम् ।
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।

(यजु. ६/४२)

अर्थ -जो सब देवों में श्रेष्ठ और बलवान है, जो सूर्य लोक प्राण और अपान तथा अग्नि का भी प्रकाशक है, जो द्यौलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवीलोक में व्यापक है, जो जड़ और चेतन जगत् का आत्मा- जीवन है, वह चराचर जगत का प्रकाशक परमात्मा हमारे हृदयों में सदा प्रकाशित रहे। *(भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती)*

उपरोक्त मन्त्र से स्पष्ट होता है कि सृष्टि में उपलब्ध अनेक ग्रह-उपग्रहों आदि से सर्वश्रेष्ठ वह प्रकाश जो आगे ले जाने वाला होता है। यही कारण है कि मकर संक्रांति के पूर्व सम्पूर्ण देश में इस उत्सव को मनाने की विविध प्रणालियां है। इस पर्व की मान्यताएं एक हैं, लेकिन इसे मनाने के अन्दाज अलग-अलग है। पंजाबी समाज 'लोहड़ी', सिन्धी समाज 'लाललोई', तमित समाज 'पेड़ा मांड़गा', दक्षिण भारतीय 'पोंगल', उत्तर भारतीय 'खिचड़ी' पर्व तथा मराठी के ब्राह्मण समाज 'मकर संक्रांति' के रुप में मनाते हैं। यहां अति संक्षेप में इनका विवेचा इस प्रकार है :-

(१) मराठी समाज :- महाराष्ट्रियन समाज में प्रातः स्नान के बाद मिट्टी से बना छोटे-बड़े जिसे सुपणा या वाण कहा जाता है में अनाज, तिल, गुड़ का दान किया जाता है। समाज में एक सप्ताह तक हल्दी, कुमकुम मिलन समारोह मनाया जाता है। ऐसे आयोजन घर-घर में होते हैं।

(२) पंजाबी समाज :- पंजाबी समाज की मान्यतानुसार इस अवसर पर 'लोहड़ी' पर्व मनाया जाता है। यह नई फ़सल के आने का पर्व है। रात्रि में 'लोहड़ी' आग जलाकर मनाई जाती है। पिछले पूरे वर्ष में कोई हर्षोत्सव, सन्तान जन्म, नये शिशु का आगमन के उपलक्ष्य में यह 'लोहड़ी' पर्व अधिक व्यापक रुप में मनाया जाता है तथा परिजनों में मिठाई बांटी जाती है।

(३) मलियाली समाज :- इस समाज द्वारा 'अयम्मा' (महादेवी) मंदिर में मक्का विलक्क की विशेष पूजा की जाती है। महिलाएं लालपीली वेशभूषा के साथ पोंगल पर्व मनाती हैं।

(४) सिंध समाज :- संक्रांति के एक दिन पूर्व धान की पीड़ियों से लाललोई बनाई जाती है। खीर-गुड़, परमल का भोग अर्पित कर इसे जलाया जाता है और महिलाएं इस अग्नि की परिक्रमा लगाकर सुख-शांति तथा परिजनों की लम्बी आयु संबंधी प्रार्थना करती हैं।

(५) उत्तर भारतीय ब्राह्मण समाज :- संक्रांति के एक दिन पूर्व इसे मनाने की तैयारी की जाती है। इस अवसर पर दाल (अरहर, तुअर) और चावल की खिचड़ी गरीबों में दान की जाती है। महिलाएं अपने सुहाग की मंगलकामना के लिए १३ वस्तुएँ महिलाओं में बांटती है।

(६) बंगाली समाज :- इस अवसर पर बंगाली परिवारों में तिल दान तथा स्नान का बड़ा महत्व है। प्रत्येक घर में चावल से बना व्यंजन पीठा और पाटी सपता विशेष रुप से बनाया जाता है। इस दिन पतंग उड़ाने का भी महत्व है।

भारत का ग्रीनविच - उज्जैन नगर
भारत का गौरव - महाकाल नगर

भारत का ग्रीनविच मध्यप्रदेश में स्थित उज्जैन नगर माना जाना चाहिए। अंग्रेज शासकों ने भारतीयों में हीन भावना उत्पन्न करने की दृष्टि से इंग्लेण्ड के लन्दन से गुजरने वाला देशान्तर रेखा को ग्रीनविच कहकर इसे विश्व प्रसिद्ध कर दिया। किन्तु अंतरिक्ष में विद्यमान अनेकानेक ग्रहों, सूर्य, चन्द्र निहारिकाओं तथा आकाश गंगाओं के संबंध में उज्जैन स्थित शोध शाला में अनेकानेक वैज्ञानिक शोध और मान्यताएँ स्थापित की है। इसलिए स्वतंत्र भारत में उज्जैन हमारी ग्रीनविच रेखा है। यह भारत के गौरवपूर्ण स्थान है। यह महाकाल नगर है। सं.

पतंगोत्सव का पर्व

इन दिनों आकाश साफ रहने के कारण देश के अनेक नगरों में पतंके उड़ाई जाती है। ये पतंगें भी भिन्न-भिन्न आकृति तथा पतंगे कागज का कलात्मक रुप से बनाकर उड़ाई जाती है। इसमें एक व्यक्ति पतंग उड़ाता है तो दूसरा उसका सहायक रंगीन मन्जा लपेटेने के लिये रहता है। इस अवसर पर पतंग प्रतियोगिताएं भी खूब होती है और तेज मन्जें में जो कि बारिक कांच में लिपटा होता है, उससे धागा काटकर पतंगे काटी जाती है। प्रतियोगिता में हार-जीत का भी बड़ा महत्त्व है। उत्तर प्रदेश में 'गिल्ली डंडा' भी खेला जाता है।

पक्षी हिंसा :- आकाश में पतंग प्रतियोगिता के समय तेज मन्जे से कई पक्षी इसमें फंस जाते हैं और घायल होकर नीचे गिर पड़ते हैं। कई प्रान्तों में पतंग बनाने का उद्योग बड़े पैमाने पर चलाया जाता है।

उत्तरायण की ओर प्रस्थान :- २२ दिसम्बर को इस खगोलीय घटना के अन्तर्गत दिन की अवधि लम्बी तथा रात्रियां छोटी होने लगती है। इसे ही उत्तरायण का प्रारम्भ कहा जाता है। यह ध्यान रखने योग्य सिद्धान्त है कि प्रतिवर्ष २१ मार्च से दिन व रात बराबर होते हैं तथा २१ जून तक दिन बड़े होते जायेंगे। इस प्रकार मकर संक्रांति का पर्व अपने साथ अनेक पर्व लेकर आता है। इस पर्व का प्रमुख घटक सूर्य ही है। इसलिए भारतीय समाज में इस वृहस्पति अर्थात् गुरु पर्व भी कहा जाता है।

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर,
इन्दौर -४५२००१ (म.प्र.)

क्या हमारे लिए दूसरा व्यक्ति अग्निहोत्र आदि कर सकता है ?

वैदिक संस्कृति में पंजमहायज्ञ का महत्व अतिविशेष है। एक प्रकार जो इन पंचमहायज्ञों का नित्य अनुष्ठन करता है तथा निमित्त अपने पर यथाकाल सोलह संस्कारों का अनुष्ठान करता है, वह आर्य कहलाता है। इसमें जो स्वयं इन पंच यज्ञों का स्वगृह में अनुष्ठान करते हैं वे बहुत ही प्रशंसनीय है, धन्यवाद के पात्र है। पंचमहायज्ञों में प्रथम ब्रह्मयज्ञ जिसमें स्वाध्याय व ईश्वर उपासना दो हैं। ये दोनों ही कार्य व्यक्ति को स्वयं को अपने लिए करने पड़ते हैं। कोई दूसरा हमारे लिए जप-ध्यान-योगाभ्यास-स्तुति प्रार्थनोपासना नहीं कर सकता है। वैसे ही स्वाध्याय (=मोक्षशास्त्रों का अध्ययन) हमारे लिए दूसरा नहीं कर सकता है। क्यों ? ये कार्य केवल मन के अधीन है, बाह्य साधनों से ये कार्य सम्पादित नहीं होते इसलिए दूसरा हमारे लिए नहीं कर सकता। (इस में प्रमाण-शुक्ला **तपःस्वाध्यायध्यानवताम्। सा हि केवले मनस्यायतत्वाद् बहिः साधना-नधीना न परान् पीड़यित्वा भवति।** (यो.द. व्यासभाष्य ४-७) अन्य चार महायज्ञ बहिःसाधनाधीन है, केवल मन में नहीं होते है, मन के साथ साथ बाह्यसाधन वाणी, शरीर व भौतिक द्रव्यों से सम्पादन किये जाते हैं। मन में श्रद्धा व भावना होती है तथा शरीर से द्रव्यों को लेकर कुछ क्रियायें सम्पादित की जाती है। जो प्रथम भाग श्रद्धा व भावना है, उसे स्वयं को सम्पादित करना पड़ता है। दूसरा भाग शरीर से द्रव्य होम करना भी स्वयं करना बहुत अच्छा है। इसके विषय में नहीं कहना चाहिए कि स्वयं क्यों इतना परिश्रम करते हो दूसरों से करवाओ और ऐसा कोई आचार्य कहता भी नहीं। - **संमाधानकर्ता -स्वामी मुक्तानन्द**

मकर संक्रान्ति पर्व की हार्दिक शुभकामनायें

मकर संक्रान्ति पर्व महर्षि के विचारों का जन-जन में संक्रमण की प्रेरणा देता है। इस पर्व पर आर्य उपदेशकों, प्रचारकों, वक्ताओं, कलाकारों, पाठकगणों और लेखकों को छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

संस्मरण

भारत मां को गर्व है जिस लाल पर - लाला लाजपतराय

२८ जनवरी जन्म दिवस पर विशेष

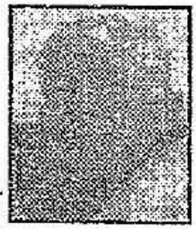

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के जिन महापुरुषों ने स्वदेश हित के लिए सर्वोत्कृष्ट बलिदान किए उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है ये वही बलिदानी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्रभक्ति का पाठ उन्होंने स्वामी दयानन्द से सीखा था। और आर्य समाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाये। जन्म से वैश्य किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुंदिके में २८ नवंबर १८६५ को हुआ। उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे। उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं का गहराई से अध्ययन किया था। दीनेमुहम्मदी में उनकी गहरी आस्था थी। अग्रवाल बनिया होते हुए भी वे नियमित रूप से नमाज पढ़ते थे, रमजान के महीने में रोजा रखते थे। १८८० में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाला लाजपतराय लाहौर आए। गर्वमेंट कालेज से एफ.ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएँ साथ-साथ उत्तीर्ण की। १८८२ में वर्ष के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये, लाला साईदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने। पं. गुरुदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहां कालेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे वहां ये लोग आर्यसमाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता थे। जब ३० अक्टूबर १८८३ को आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का अजमेर में निधन हुआ। तब आर्यसमाज लाहौर की ओर से ८ नवंबर को एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इसमें निश्चय हुआ कि दिवंगत महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज के नाम से एक ऐसी शिक्षण संस्था की स्थापना की जावे जिसमें संस्कृत एवं हिन्दी के उच्च स्तरीय शिक्षण, वेदादि शास्त्रों की गंभीर शिक्षा के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था हो। डी.ए.वी. कालेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपत राय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य बनकर कालेज की स्थापना हेतु धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगर में जाते रहे। जब यह महाविद्याथ सुचारु रूप से चल पड़ा तब इसकी शिक्षा में नीति को प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी.ए.वी. कालेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरुप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्य नेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए। किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

१९२० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चलाए गये और सरकारी स्कूलों और कालेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी.ए.वी. कालेज के संचालकों को देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कालेज को बंद कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने ऐसा कदम उठाने से इन्कार कर दिया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जा सकती है। लाला लाजपतराय ने १८८५ में वकालत की परीक्षा पास की। कुछ काल तक रोहतक तथा हिसार में वकील के रूप में कार्य करने लगे।

शीघ्र ही उन्हें अपने कार्य में आशा से अधिक सफलता मिली। कानून के पेशे में भी उनकी प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी। १८८८ में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। १९०६ में वे पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहां से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया। लाला जी ही प्रथम महापुरुष थे जिन्होने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतंत्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचार धारा का प्रवेश कराया। उन्होने १९०५ में बनारस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय उनका स्वागत करते का डटकर विरोध किया। सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था इसका परिणाम कांग्रेस में पड़ी फूट के रूप में प्रत्यक्ष हुआ और पं. मदनमोहन मालवीय, रासबिहारी घोष तथा फिरोज शाह मेहता आदि नरम नेताओं ने महसूस कर लिया कि भारत अब भावी राजनीति को स्वरूप देना लाला लाजपतराय और उनके साथियों के अधिकार में आ गया है।

पंजाब में किसान जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीत सिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के माण्डले नगर में नजरबंद कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचार पूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अवहेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लौटने पर एक लोकप्रिय जननायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता उन्हें इस आंखों में उठा लिया।

आर्यसमाज में रहकर ही लाला जी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। १९११ में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए। उन्होने अनाथ बालकों को आर्य अनाथालय फिरोजपुर में प्रवेश कराया, जबकि ईसाई मिशनरी उन्हें लेने को तैयार बैठे थे। १९०५ में कांगड़ा में भयंकर भूकंप ले जन-धन की अपार क्षति हुई। उस समय भी वे भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर पहुंचे। इस कार्य में डी.ए.वी. कालेज लाहौर के छात्र लालाजी के साथ थे। उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त में जब १९०७ में भयंकर दुष्काल पड़ा तब लालाजी तुरंत सहायता कार्यों में जुड़ गए। अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। १९२० में विदेश यात्रा से लौटने पर उन्होने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन पर समर्थन किया। इसी वर्ष कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। १९२४ में उन्होने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए स्वामी श्रद्धानन्द पं. मदनमोहन मालवीय की ही भांति लालाजी का कांग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टिकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसलिएं उन्होने हिन्दू सभा सच्चे राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि में संकीर्ण या साम्प्रदायिक जमात नहीं समझी जाती थी।

१९२८ में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायजा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन कमीशन यहां भेजा गया कांग्रेस ने इसका बहिष्कार का निर्णय लिया। ३० अक्टूबर को कमीशन लाहोर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेल्वे स्टेशन पर ही काले झंडे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने धारा १४४ लगा दी। तथापि सैकड़ों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। सायमन वापस जाओ के नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला निहत्थे नागरिकों पर डण्डा प्रहार होने लगा। अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढ़े शेर को मार्मिक आघात पहुंचा। उसी सायंकाल आयोजित जनसभा में नर केसरी

लाला लाजपतराय ने गर्जनापूर्ण स्वर मेंकहा कि मेरे शरीर पर पड़ी विदेशी सरकार की एक-एक लाठी अंग्रेजी राज्य के कफन की कील साबित होगी। इसी लाठी प्रहार से पीड़ित लाला लाजपतराय का १७ नवंबर १९२८ को निधन हो गया।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक श्रेष्ठवक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्त्ता, समर्पित समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री गंभीर चिंतक तथा विचारक थे। उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेजी में अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की भारत तथा विदेश के कतिपय महापुरुषों के उनके द्वारा लिखित जीवन चरित अत्यंत लोकप्रिय हुए। सम्राट अशोक, शिवाजी, स्वमी दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र तो उन्होंने लिखे ही इटली के देशभक्त तथा मैजिनी के जीवन चरित्रों ने उन्हें अभूतपूर्व ख्याति दिलाई। देशवासियों में स्वातंत्र्य चेतना जागृत करने में इन ग्रन्थों की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण मानी गई कि विदेशी शासन में उन जीवनियों पर प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय शिक्षा तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी उन्होंने प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। उनकी लिखी दि आर्यसमाज नामक पुस्तक १९१४ में प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है।

पता : ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर (राज.)

अमृतवाणी

देवत्व की कामना!

-दयाशंकर गोयल

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते, देवयन्तस्त्वमहे।
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानवः, इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ (यजु. ३४-५६)

अवगुण और असद् कर्मों से जनाक्रान्त होकर के।
निकट दनुजता के जा पहुंचा मानवता खोकर के ॥
काम, क्रोध, लोभादि में फस मानवता ठुकराई।
अब इससे भी ऊब चुका है, ऐसी स्थिति आई ॥
तो अन्तस् में जगी अभीप्सा देव-पुरुष बनने की।
दिव्य गुणों को धारण कर देवत्व प्राप्त करने की ॥
अस्तु, याचना करता प्रभु से 'ब्रह्मणस्पते'-महेश्वर।
वेद, ब्राह्मण, सर्वेश्वर्यों के स्वामिन्-परमेश्वर ॥
तज प्रसुप्ति **'उत्तिष्ठ'** जगो प्रभु ! मेरे हृदय सदन में।
'देवयन्त' देवत्व प्राप्ति की हम इच्छा ले मन में ॥
'त्वा ईमहे' करें याचना तुमसे, शक्ति सुमति हो।
हम पाने देवत्व बढ़ सकें साथ तुम्हारे, गति दो ॥
अहे 'इन्द्र'-जीवात्म हमारे ! तुम कटिबद्ध होकर के।
'मरुतः' प्राणगणों की सेना 'सचा' संग लेकर के ॥
'प्राशू' पाने को देवत्वम् आशुगतिर् 'भव' - हो ओ।
उत्कट क्रियाशीलता, चुस्ती, फुर्ती मनस, सजोओ ॥
'मरुत सुदानवः' प्राण सुदानु हैं, उत्कृष्ट लाभ प्रदाते।
वे साधक को 'उपप्रयन्तु देवत' के पथ-पथ लाते ॥
क्योंकि, प्राण का आरोहण, अवरोहण जब सध जाता।
पूरण-कुम्भन-रेचन से कल्मष-कषाय जलाता ॥
फिर उपासना कर साधक ज्यों ज्यों सद्गुण अपनाता।
त्यों त्यों वह देवत्व प्राप्ति के पथ पर बढ़ता जाता ॥

पता - १५५४, डी, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

आर्यसमाज का स्वरुप :- आर्यसमाज एक 'सार्वभौम आस्तिक धर्म प्रचारक संघ है', जो सृष्टि को रचने वाली सर्वोपरि एक दिव्य चेतना शक्ति तथा जनहित के लिए उसके दिये आदिज्ञान (कल्याणी, वाणी, वेद) को स्वीकार करता है। उस वेद ज्ञान के अपने कार्य-कलाप, कर्त्तव्यों, विधि-विधानों व दार्शनिक सिद्धान्तों का आधा मानता है। यह सत्य सनातन वैदिक धर्म को मानव के अभ्युदय (अर्थ, काम) और निःश्रेयम् (मोक्ष) का साधन मानता है।

क्या यही गणतंत्र है?

लाज से पलके झुकाए देश के हिम खण्ड हैं।
जल रहा है शौर्य अब तो संयमों के कुण्ड हैं,
स्वार्थ के अंधड़ में बनकर तृण उड़ी संवेदना,
मांग सूनी रह गयी विधवा, बनी हर कल्पना,
है विधुर हर गीत टूटा, भावना का तंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

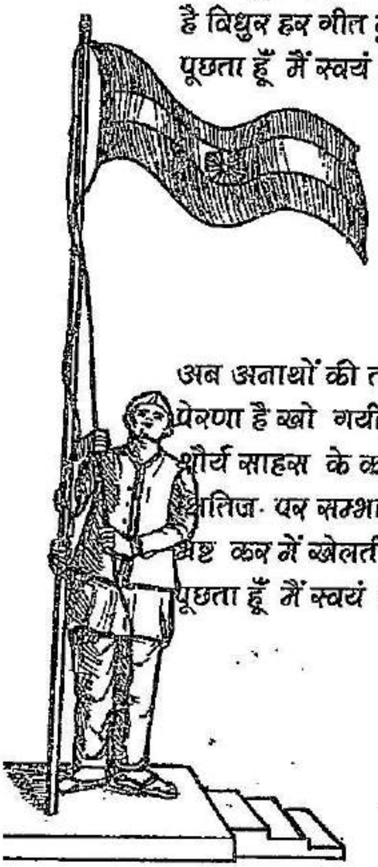

संस्कृति के द्वार पर, अब नीति की सांकल नहीं।
आस्था के शीश पर ,श्रद्धा का है आँचल नहीं,
नग्न स्वागत को खड़ी , है देश में निर्लज्जता,
अब पुरातत्वों में ही है ,शेष अपनी सभ्यता,
देह तो स्वतंत्र लेकिन, आत्मा परतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

अब अनाथों की तरह, हर स्वप्न पलते नैन में।
प्रेरणा है खो गयी, अंधकारमय इस रैन में,
शौर्य साहस के कथानक, गूलरों के फूल हैं,
क्षितिज पर सम्भावना की, उड़ रही अब धूल है,
भ्रष्ट कर में खेलती यह, देश भक्ति यंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

है यही उपलब्धि अपनी, निर्धनों की झुग्गियाँ।
रेशमी बिस्तर पर टूटी, अनगिनत है चूड़ियाँ,
कचरों में खोजता , रोटी मुझे बचपन मिला,
सो रहा फूटपाथ पर, इस देश का यौवन मिला,
किस तरह बोलें कि, हम तो हो गए स्वतंत्र हैं।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

वह फसल आतंक की, घर में हमारे बेचते।
बैठ दर्शक दीर्घा में, हम तमाशा देखते,
अब तो हर नेतृत्व, बन बैठा मृग मरीचिका,
चित्र सारे हैं अधूरे, खो गयी है तूलिका,
पृष्ठ पर सत्ता है केवल, हाशिया जनतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

: प्रेषिका :
श्रीमती दीपाली वर्मा, भिलाई (छ.ग.)

पुण्य स्मरण

लोह पुरुष - स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी

कीर्तिर्यस्य स जीवित

- स्वामी सदानन्द सरस्वती

जन्म :- महर्षि दयानन्द १८७६ ईस्वी में पंजाब आए। उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। नवजागरण की इस शुभ बेला में सरदार भगवानसिंह के घर पोष मास विक्रम संवत १९३४ की पूर्णिमा को बालक केहरसिंह ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के नाम से विख्यात हुआ। लुधियाना जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियां दी है। राष्ट्रवीर लाला लाजपत राय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक भी इसी की देन थे। इसी जिला के मोही ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने इसे गौरवान्वित किया। श्री पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी भी इसी जिला के हैं।

परिवार :- बालक केहर सिंह के पूर्वज हल्दी घाटी से आकर यहां बसे थे। उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पल कर केहरसिंह यथा नाम तथा गुण बन गये। सरदार भगवानसिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया इसलिये केहरसिंह का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्वा लताला में हुआ।

आर्यसमाज का परिचय :- लताला में श्री पं. बिशनदास जी उदासी महात्मा से वैद्यक पढ़ते रहे। इन्हीं पंडित जी के सत्संग से वैदिक धर्म के संस्कार विचार मिले और इन्हीं महात्मा जी के डेरे पर महात्माओं के सत्संग से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का संकल्प करके विरक्त हो गये।

गृह त्याग और संन्यास :- पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें परन्तु केहरसिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये। धर्मशास्त्रों का पठन-पाठन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे। आर्यसमाज के नेताओं व विद्वानों में सर्वप्रथम आपने ही (१९५७ विक्रम) संन्यास लिया।

विदेशों में :- संन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे। इसके लिए किसी सभा संस्था से आपने कोई आर्थिक सहायता नहीं ली। स्वदेश लौटे तो पं. बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत आर्यसमाज के कार्य में जुट गये। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया। फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ।

पुनः विदेश यात्रा :- १९१४ ई. में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिये गये। तीन वर्ष तक आपने वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की वहां रक्षा की। राष्ट्रभाषा का प्रचार किया। जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में :- १९१६ में स्वदेश लौटकर आर्यसमाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। १९१९ ई. में मार्शल लॉ के दिनों में पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा पर आपने कांग्रेस को विशेष सहयोग किया। १९२० ई. में बर्मा गये। वहां धर्म प्रचार के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। माण्डले की ईदगाह से २५००० के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का खुल्लम-खुल्ला प्रचार किया। अंग्रेज सरकार की आंख में आप कांटे की भांति चुभने लगे।

काल कोठरी में :- १९३० ई. में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे, तो आपने सत्याग्रह को चलाया। डॉ. मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिये प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी बनाए गए। इस काल में आंध्र प्रदेश के विख्यात कांग्रेसी नेता व स्वतन्त्रता सेनानी पं. नरेन्द्र (हैदराबाद) इत्यादि को आपने जेल भेजा।

१९३० ई. में लाहोर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा से अध्यक्ष पद से एक भाषण देने परा आपको बन्दी बना लिया गया। आपकी गतिविधियों के कारण

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय की सरकार ने तलाशी ली। स्वराज्य संग्राम में केवल आर्यसमाज के उपदेशक विद्यालय (मिशनरी कालेज) की ही तलाशी ली गई।

सेना में विद्रोह का आरोप :- १९४२ ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापदोड़ा कस्बा हरियाणा में एक बैठक बुलाकर हरियाणा के चौधरियों से कहाकि सेना में कार्य करने वाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि सत्याग्राहियों पर गोली मत चलाएं। आप की हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पड़ा। सरकार यह सहन न कर सकी। वायसराय के विदेश आदेश से आपको शाही किला लाहोर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएँ दी गई। किला से छोड़े गये तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानागर में नजरबन्द किए गए। आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नर के वधन का षड़यंत्र करने का भी आरोप लगाया गया।

क्रान्तिकारियों को शरण :- आप दस वर्ष श्री मद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के प्राचार्य पद पर आसीन रहे और सैकड़ों योग्य शिष्य आर्यसमाज को प्रदान किये जो उनके चरण चिन्हों पर चलते हुये आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिष्ठाता वेद प्रचार का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था। तब अपने समय-समय पर कई भूमिगत क्रांतिकारियों को लाहोर में शरण दी।

१९३८ ई. में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापन करके इसे मानव केन्द्र बनाया। धर्मप्रचार संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र ही है। सहस्रों रोगी प्रतिदिन यहां धर्मार्थ औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। इस आश्रम में भी देश के स्वतन्त्र होने तक कई क्रान्तिकारी देशभक्त भूमिगत होने के कारण शरण पाते रहे, महात्मा गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रुप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी। इस समय उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज इस मठ के अध्यक्ष थे।

नवाबों से टक्कर :-आपने मालेरकोटला, लोहरु व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगाकर जन अधिकारियों की रक्षा की। आपके सफल व कुशल नेतृत्व से आर्यसमाज को अपूर्व विजय प्राप्त हुई। महात्मा गांधी आदि नेता भी आपकी कार्यक्षमता से अत्यन्त प्रभावित हुए। इन संघर्षों से स्वराज्य आन्दोलन की गति तीव्र हुई।

लहूलुहान :- लुहारू में तो आप पर कुल्हाड़ों व लाठियों से प्राण घातक प्रहार किये गये। आजन्म ब्रह्मचारी ६५ वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खड़े रहे। आपके सिर पर इन घावों के इक्कीस चिन्ह थे। एक तो बहुत बड़ा निशान दूर से ही दिख जाता था।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत :- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्यसमाज के प्रचार के लिए गए। देश स्वतन्त्र हुआ तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये। आपने इन देशों में रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। मारीशस की स्वतन्त्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बड़ा काम किया।

बहुमुखी प्रतिमा - तेजस्वी व्यक्तित्व :- अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के लिए आपने अविस्मरणीय काम किया। स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया। पीड़ित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे। आप कई भाषाओं के विद्वान, लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आप वर्षों आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्ता प्रधान रहे।

महाप्रयाण :- बलवान शरीर में बलवान आत्मा की उक्ति आप पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। भीमकाय स्वतन्त्रतानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे। १३ अप्रैल १९५५ को बम्बई में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ।

पता : दयानन्द मठ, दीनानगर, जिला-गुरुदासपुर (पंजाब)

प्रत्येक कार्य को निश्चित समय पर करो।

वैचारिक

"किस्त"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

जैसे ही पता चला पिता जी की तबियत हद से ज्यादा खराब है और वे आई.सी.यू. में भर्ती है। छोटे बेटे ने मोबाइल पर खबर दी। बड़ा बेटा परिवार सहित मुम्बई से चला गया। बड़े बेटे की इंजीनियरिंग की पढ़ाई के कारण वे छोटे बेटे पर ज्यादा खर्च करने की स्थिति में नहीं थे। बड़ा बेटा था भी पढ़ने में होशियार। हर साल अव्वल नम्बरों से पास होता था। पिता ने उसकी योग्यता और भविष्य को देखते हुए इंजीनियरिंग कालेज में उसका दाखिला करवा दिया। पिताजी ने अपनी सारी जमा पूंजी बेटे की पढ़ाई पर खर्च कर दी। छोटे बेटे को बी.ए. से संतुष्ट होना पड़ा। हालांकि उसे संगीत से लगाव था। उसने पिता से कई बार कहा भी कि वे उसे संगीत विश्वविद्यालय में दाखिला दिलवा दे। लेकिन पिता के पास इतने रुपये नहीं थे कि वे उसका दाखिला महानगर के संगीत विश्वविद्यालय में करा सके। छोटा बेटा पिता की आर्थिक स्थिति से परिचित था। उसने समझौता करके बी.ए. द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली थी। जिस देश में पी.एच.डी., एम.एस.सी. इंजीनियर एम.बी.ए. वाले छात्र बेरोजगार घूम रहे हों। वहां बी.ए. पास की क्या बिसात ? काफी लम्बे समय नौकरी तलाशने के बाद छोटे बेटे ने पान की दुकान खोल ली। बड़े बेटे की अच्छी कमाई थी। लेकिन खर्चे भी थे। बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ते थे। एक फ्लैट उन्होंने बैंक से कर्जे पर ले रखा था। जिसकी तीन माह से वे किस्त नहीं चुका पा रहे थे। आधे से ज्यादा पत्नी के इलाज में खर्च हो रहा था। बैंक से उन्हें नोटिस मिल चुका था कि यदि चौथे माह किस्त नहीं भरी गई तो फ्लैट नीलाम कर दिया जायेगा। जैसे-तैसे इधर-उधर से उन्होंने बैंक की चार माह की किस्त एक लाख अस्सी हजार रुपये जुटा ली थी। तभी बाबूजी की बीमारी का पता चला। वे दौड़े आये। वे जानते थे कि पिता ने उसे सारी जमा पूंजी खर्च करके उधार ले-लेकर पढ़ाया है।

डॉक्टर ने कहा - "आपके पिता का ऑपरेशन होना है, दो लाख रुपये के करीब खर्च आयेगा। आप पैसा जमा कर दे ताकि उनका ऑपरेशन हो सके।"

छोटे बेटे ने अपनी पान की दुकान से बचत में जमा की गई राशि २०,००० रुपये मां के सामने रखते हुए कहा - "मैं ठहरा गरीब पानवाला। मेरी कुल बचत यही है।"

माँ ने बड़े बेटे से कहा - "तुम क्यों कुछ नहीं बोलते? एक लाख रुपये तुम्हारा वेतन है। तुम्हारे लिये तो २ लाख रुपये मामूली बात है।"

बड़े बेटे ने कहा- क्यों नहीं अम्मा। पिता जी ने मेरे लिए इतना किया है। क्या मैं इतना भी नहीं कर सकता? माँ मेरी कमाई एक लाख रुपये हैं। लेकिन तुम तो जानती हो माँ आपकी बहू का इलाज चल रहा है। आपके पोते महंगे स्कूलों में पढ़ रहे हैं। फिर मैंने एक फ्लैट लिया है जिसकी किस्तें भी नहीं भर पा रहा हूँ। बैंक फ्लैट की नीलामी की बात कर रहा है। बड़े पद के अनुसार रहन-सहन का स्तर भी बढ़ जाता है। नौकर-चाकर, गाड़ी और भी न जाने कितने प्रकार के खर्चे होते हैं।" कहते हुए बड़ा बेटा चुप हो गया। माँ ने गुस्से में कहा - "तुम्हें इतना पढ़ाने लिखाने का क्या फायदा ? वही रुपया तुम्हारे पिता अपने भविष्य के लिए सुरक्षित रखते तो आज उनके काम आते। तुम घर के बड़े बेटे हो। तुमसे कुछ उम्मीदें हैं हमारी। तुम्हारी मजबूरी समझती हूं मैं, लेकिन बेटा तुम्हारे पिता, मेरे सुहाग का सवाल है। तुम्हारे पिता के ठीक होते ही तुम्हारे रुपये मकान बेचकर वापिस कर देंगे।"

बड़ा बेटा पशोपेश में था। उसके बैग में १,८०,००० हजार रुपये थे। वह दे सकता था। देना चाहता था। फिर उसे बैंक मैनेजर की बात ध्यान में आ जाती। अगले महीने आपने किस्त नहीं भरी तो फ्लैट नीलाम कर देंगे। आप रहने का दूसरा बन्दोबस्त कर ले। हम फ्लैट को सील करके उसकी बोली लगायेंगे। तुम्हारी अपने लोगों

में बेईज्जती होगी सो अलग।

बड़ा बेटा बार-बार सोचता कि पिता की जिन्दगी बचाना जरुरी है। यह उसका कर्त्तव्य है। वह जैसे ही बैग की तरफ हाथ बढ़ाकर रुपये निकालकर अम्मां को देने की सोचता तभी उसे बैंक की किस्त याद आ जाती। मुम्बई जैसे शहर में किराये का फ्लैट मिलना क्या इतना आसान है वो भी इतनी पॉश कालोनी में। इस विचार के मन में आते ही उसका हाथ बैग से भरे रुपयों से पीछे हट जाता। वह पशोपेश में था कि वह क्या करे ? उसकी बुद्धि ने उसे समझाया कि पिताजी तो अपनी उम्र जी चुके हैं। जो जिन्दा है जिनके सामने पूरा जीवन पड़ा है उनके बारे में सोचना चाहिए। बच्चों के लिए पढ़ाई पत्नी के इलाज के लिए रुपये ज्यादा जरुरी है। यदि पत्नी को कुछ हो गया तो बच्चों का क्या होगा ? वे अपनी माँ के बिना कैसे रह पायेंगे ?

फिर उसका हृदय उसे धिक्कारता - "जिसने जीवन दिया। पाल-पोसकर बड़ा किया। मेरी पढ़ाई, नौकरी के लिए अपनी सारी जमा पूंजी खर्च कर दी। क्या पिता के प्रति उसका कोई कर्त्तव्य नहीं है।" उसके मन में उथल-पुथल मची हुई थी। वह क्या करे रुपये दे या बैंक की किश्तें भरे।

उसने माँ से कहा - "माँ आप बता देती तो मैं कुछ व्यवस्था करके लाता। अभी तो खाली हाथ आया हूँ। कुछ समय डॉक्टर से लेने की कोशिश करें। मैं दो-चार माह में इंतजाम करके आता हूँ।"

छोटे भाई ने कहा - "भैया, डॉक्टर का कहना है कि ऑपरेशन के लिए एक दिन से ज्यादा नहीं रुक सकते। अन्यथा पिताजी को बचाना संभव नहीं होगा।"

बड़ा बेटा रुपये साथ लाया था। उसका दिल भी चाह रहा था कि रुपये पिता के इलाज में दिया जाना जरुरी है। अन्यथा उसके सिर से पिता का साया उठ जायेगा। अपने पिता का हत्यारा कहलायेगा। स्वयं को कभी माफ नहीं कर सकेगा। लेकिन बैंक की किस्त का ध्यान आते ही उसके हाथ जैसे कोई अदृश्य जंजीर बांध देती। पिता का देहान्त हो गया। लेकिन बैंक की किस्त समय पर भर दी गई।

- शूरवीर -

एक दिया जो अंधेरों से लड़ता
तूफानों के बीच में बहुत देर तक
और बुझ गया।
वो लड़ा नामचीन वीरों की तरह
लेकिन उसका कहीं नाम भी न आया
लड़ा वो हद से ज्यादा पूरी ताकत से
जिसने देखा, सुना गर्व किया उस पर
मेरा भी नमन है उन वीर सपूतों को
जिनके शव भी न मिले
नाम भी न हुआ
ऐसे अनगिनत दीपक लड़ रहे हैं
अंधेरों से तेज हवा के सायों में
बिना किसी बात की फिक्र किए हुए
ऐसे गुमनाम वीरों की चरण
वन्दना करते हैं हम।
जिन्हें न नाम चाहिए था
न इनाम न मैडल न इतिहास में
जगह
पर वे लड़े पूरे जोर से
उन लड़कर बुझते दियों
को हृदय से अभिनन्दन।
वे थे इसलिए हम हैं
हमारे लिए ही वे लड़कर मरे थे
जब हम घर में बैठे थे सुकून से
और हमें पता भी न चला कि
कोई जान लगाकर बचा रहा है
हमें।

पता - पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव,
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४९०००१

वैदिक दर्शन आरोग्य और होमियोपैथी

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

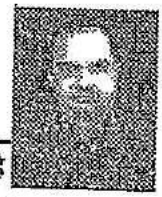

आमयोगश्च भूतानां जायते येन सुव्रत।
तदैव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सक्रम् ॥

अर्थात् :- प्राणियों को जिस पदार्थ के सेवन से जो रोग हो जाता है, वही पदार्थ चिकित्सा विधि के अनुसार प्रयोग करने पर उस रोग को दूर नहीं करता ?

शताब्दियों से विश्व चेतना के आकाश में यह प्रश्न गूंजता रहा समय समय पर **"समः समं शम्यति विषस्य विषमौषधं कष्टके नैव कण्टकम्"** जैसी प्रतिध्वनियाँ इधर उधर से आती रही पर होमियोपैथी के जन्मदाता ने **"सिमिलिया सिमिलबस क्यूरेन्टर या लेट सिमलर बी ट्रीटेड बाई सिमलर या ह्वाट काजेस ए कण्डीशन हैज कैपिसिटी टू क्योर इट"** के उद्घोश के साथ होमियो चिकित्सा विज्ञन के रुप में उसका विस्तार से जो समुचित उत्तर दिया है व अनुपम या बेजोड़ है।

कहाँ पूर्व शिक्षा से उठा हजारों वर्ष वैदिक ग्रन्थ का प्रश्न और कहां पश्चिम से आने वाला उत्तर ?

ऐसा मालूम पड़ता है मानों दोनों दिशाएँ एक दूसरे के आमने सामने होकर शास्त्रार्थ कर रही है या विश्व चेतना यह सिद्ध कर रही है कि वह समय, देश और भाषाओं के बंधन से परे हैं। इस समस्त ब्रह्माण्ड में समान रुप व्याप्त एक ही सत्य है कि शाश्वत सत्य है जिसमें न पूर्व है और न ही पश्चिम है। ऋषियों के द्वारा आरोग्य मन्त्र को महात्मा हैनिमेन ने अपनी सूझबूझ और सूक्ष्म बुद्धि से उसके आत्मा को पहचाना। इस पावन यज्ञ की निरंतर प्रज्वलित रहने वाली अग्नि शिखाओं ने और उसकी अमृतोपम जीवन सुगन्ध ने समूचे विश्व को नया प्राण और नई चेतना प्रदान की है।

दीर्घ रोग क्या है ?

जन्म मरण का एक चक्र ही दीर्घ रोग है, बाकी सर्दी, खांसी, बुखार तो साधारण और रोजमर्रा के रोग है। यह दुनिया रोगों से ग्रस्त लोगों की दुनिया है। जैसे कि गुरुनानक देव जी महाराज ने कहा है कि "नानक दुखिया सब संसार" महात्मा कबीरदासजी ने कहा कि "जो देखा सो दुखिया देखा तनधरि सुखिया न देखा" कविवर सुमित्रानंदन पन्त के अनुसार "जग पीड़ित है अति सुख से जग पीड़ित है अति दुख से"।

भारतीय अध्यात्मिक दर्शन इस मन को ही उन सभी दीर्घ रोगों का कारण मानते हैं। "मन एवं मनुष्याणामं कारणम् बन्ध मोक्षणे" होमियोपैथी के जन्मदाता महर्षि हैनिमेन ने भी रोगों की उत्पत्ति तथा निवरण कोमन ही माना है। वे कहते हैं कि रोग की नहीं वरन् रोगी की चिकित्सा करनी चाहिए।

अब प्रश्न उठता है कि रोगी पंचभूतों द्वारा निर्मित केवल पार्थिव शरीर नहीं ? वरन् इसमें रहने वाला सूक्ष्म अंतरात्मा जो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकारयुक्त अन्तःकरण वाला है। वह व्यापक चेतना जो उन सबको संस्थापित करती है, इसका नियंत्रण करती है, जिसे सरल तत्व कहा महात्मा डॉ. कैण्ट ने अपने अद्भुत ग्रन्थ में लेक्चर ऑन होमियोपैथी फिलोसफी के अध्याय ९ में परिभाषित किया है कि विश्व चेतना की वह किरण जो इसके कण-कण को प्रकाशित करती है, उसे जीवित रखती है, उसे जीवनी शक्ति (वायटलफोर्स) होमियो का प्राण सूक्ष्मता और शक्तिकरण का मूल सिद्धांत छिपा पड़ा है।

यदि रोग मन में जन्म लेता है तो दूर भी किया जा सकता है। पवित्र चिन्तन से पहले अन्तःकरण निर्मल होता है। उसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है और रोग अपने मूल से नष्ट हो जाता है। इसलिए स्वस्थ एवं सुखी रहने के लिए यजुर्वेद कहता है **"तन्मेमनः शिव संकल्पमस्तु"** अर्थात् मेरा मन मन अच्छे कल्याणकारी विचार वाला है मर्यादा पुरुषोत्तम का उदात्त चरित्र-

**रघुवंसिन कर सहज सुभाउ,
मन कुपंथ पग धरेइ न काउ।
मोहि अतिसय प्रतीति जिय केरी,
जोहि सपने हू पर नारि न हेरी॥**

जागृत तो क्या स्वप्न में भी पर नारी का चिन्तन नहीं करते यह है कि पूर्ण स्वस्थ और निरोग मन की ओर विष पवित्र अवस्था। इन्हीं उत्तम विचारों से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों फलों की प्राप्ति हो सकती है।

दीर्घ रोग से छुटकारा पाने का यही मार्ग है ओज का नाश होना निश्चित ही विनाश है, उत्साह प्रतिभा और धैर्य आदि पुरुषौचित गुणों का अनिर्ममभाव इसी ओज के ऊपर अवलंबित होता है। वीर्यक्षय से शरीर का ओज पलायन हो जाएगा। ओज में जीवन है और ब्रह्मचर्य से ही उसकी रक्षा हो सकती है। ओज को हम होमियोपैथी जीवनी शक्ति (वायटलफोर्स) कहते हैं।

धर्मार्थ काम मोक्षणाम् आरोग्यम् मुलमुत्तमम् (चरक) होमियोपैथी के जन्मदाता महर्षि हैनिमेन ने अमृत के कुछ बून्दे होमियोपैथी के रुप में उस हाहाकार भरी वसुधा पर विचरने वाले प्राणियों के मन, प्राम और शरीर को चिर सुखी बनाने के लिए धनवन्तरी के रुप में प्रकट हुए यह अमृत घट हमारे लिए सामने प्रतिष्ठित किया गया है। इस अखिल ब्रह्माण्ड के कण कण से व्याप्त विशाल चेतना की कोई सीमा नहीं वह देशकाल से परे हैं। होमियोपैथी का यह अध्यात्म (वैदिक) दर्शन कितना विशाल है। यह हमारी कल्पना से परे है। यह एक सार्वभौम सत्य है और यही कारण है कि भारतवर्ष ने होमियोपैथी को सहज भाव से अपनाया है।

यदि हमारा भारतवर्ष २८०० वर्ष के महात्मा चरक की शिक्षा का अनुसरण करता तो हर भारतवासी का दैनिक जीवन यशमय हो जाता। चिकित्सक बड़ा ही भाग्यशाली है उसका दैनिक जीवन धर्म के कार्य में लगा रहता है। चिकित्सा एक व्यवसाय नहीं वरन् पीड़ित मानवता की सेवा का एक महान् कार्य है। वह अपने देशवासी भाई बहनों के आरोग्य की रक्षा करता है। वह सचमुच राष्ट्र के स्वास्थ्य की रक्षा का सजग प्रहरी है।

होमियो चिकित्सा विज्ञान में केवल भारत की नहीं वरन् समूचे विश्व का उज्जवल भविष्य छिपा हुआ है।

विमल हृदय से बहे निरन्तर करुणा धारा,
अखिल विश्व ही परिवार हमारा॥

गुदगुदी

* एक दुकानदार ने कोई डायरेक्टर संबंधी सूचना प्राप्त करने के लिए फोन १७८ नं. मिलाया। उधर से किसी युवती ने उत्तर दिया, मुझे खेद है, कृपया आप इस सूचना के लिए १७९ नं. मिलाए। दुकानदार ने नया नंबर मिलाया, बात होने पर उसे लगा कि यह स्वर उसी युवती का है। उसने कहा, अभी-अभी क्या आप से ही बात नहीं हुई थी। जी हाँ, मैं ही थी। उत्तर मिला। क्या करुँ, आज दोनों का काम मैं ही देख रही हूँ।
* बस में बहुत भीड़ थी। एक यात्री भीतर आया और बोला, उफ्! लगता है बस में जानवर भरे पड़े हैं। पास ही बैठा एक युवक बोला, जी हाँ, बस एक गधे की कमी थी, जो आपने पूरी कर दी।
* अध्यापिका ने कक्षा में प्रश्न पूछा - चैन्नई शहर का नाम चैन्नई क्यों पड़ा? काफी देर कक्षा में सन्नाटा रहा। फिर एक बच्चे ने हाथ उठाया। अध्यापिका ने खुश होकर कहा, हाँ, शाबाश बताओ। छात्र ने कहा, चैन्न शहर में लोग अधिकतर लुंगी पहनते हैं और उसमें चैन नहीं होती, इसलिए शहर का नाम चैन्नई पड़ा।
* अपने छोटे भाई के जन्म की बात सुनकर राज उसे देखने अस्पताल गया। वहां उसने छोटे भाई को गोद में ले लिया। नवजात शिशु ने राज की गोद में पेशाब कर दिया। इस पर राज पास से गुजरती हुई नर्स से बोला, यह बच्चा लीक करता है, बदल कर दूसरा दो।

- देवेन्द्र आर्य, दुर्ग

-: सुविचार :-

किसी विषय में उल्टा ज्ञान होना, <u>अविद्या</u> है। जागृत और स्वप्न का ज्ञान न होने पर, जो अनुभूति होती है वह <u>निद्रा</u> है।

समाचार प्रवाह

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द को याद किया
३४वाँ वार्षिक महोत्सव-श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय
त्रि-दिवसीय वैदिक यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ

रायपुर। श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर रायपुर के विशाल परिसर में आर्यसमाज बैजनाथपारा के तत्वावधान में दिनांक २३, २४ एवं २५ दिसम्बर २०१९ को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वैदिक यज्ञ व सत्संग के माध्यम से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के अवसर पर विद्यालय का ३४वाँ वार्षिक महोत्सव महासमारोह के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञीय कार्यों का अनुष्ठान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के धर्माचार्य पं. सूरज आर्य जी ने कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया। प्रतिदिन दोनों सत्रों में यज्ञोपरान्त वेद प्रवचन के माध्यम से सुदूर रायगढ़ से पधारे अग्निदूत पत्रिका के सम्पादक आचार्य कर्मवीर शास्त्री जी ने छात्र-छात्राओं एवं उपस्थित आर्यजनता को लक्ष्य कर विविध मन्त्रों के रहस्यों के साथ छात्र जीवन संबंधी अनेक आयामों का अपने सारगर्भित व्याख्यानों में उद्घाटन किया। वैदिक संस्कृति में यज्ञों की उपयोगिता व वर्तमान समय में वैदिक सिद्धान्तों का पालन कैसे करें आदि विषयों पर निरन्तर तीन दिनों तक सभी सत्रों में मार्गदर्शन किया।

सतना म.प्र. निवासी वर्तमान में धर्माचार्य आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के पं. नन्दकुमार जी आर्य भजनोपदेशक ने इस समारोह में सभी सत्रों के दौरान विविध छात्रोपयोगी कथा प्रसंगों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों के मर्म को बड़े ही सरल एवं सहज अन्दाज में प्रस्तुत किया। श्रीमती अनिता वर्मा जी ने अपने मधुर कंठ से प्रति सत्र प्रभु भक्ति के सुन्दर गीतों का प्रस्तुतीकरण दिया। वैदिक यज्ञ व सत्संग के दौरान आर्यसमाज कमल विहार रायपुर के धर्माचार्य पं. सुशील जी ने बड़ी योग्यता के साथ मंच का सफल संचालन किया।

त्रिदिवसीय इस समारोह का छठवीं सत्र याने अन्तिम सत्र विद्यालय का **स्नेह सम्मेलन** समापन समारोह के रुप में आयोजित हुआ, जिसमें विद्यालय के प्राचार्या एवं उनकी योग्य शिक्षिकाओं के सतत साधना व प्रशिक्षण से तैयार सभी कक्षाओं के बच्चों का सांस्कृतिक प्रस्तुती बड़ी जानदार व शानदार रही। प्रस्तुतियों में राष्ट्रीय एकता व छत्तीसगढ़ की समरसता व भाईचारा को रेखांकित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रायपुर के पूर्व महापौर एवं सांसद श्री सुनील सोनी जी ने की। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद व जनता को उद्बोधन दिया। संस्था के संस्थापक श्री बी.पी. शर्मा, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के यशस्वी प्रधान श्री दयाराम वर्मा, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री-छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज कटोरातालाब के श्री दयालदास आहूजा, श्री जगदीश पसरीचा, महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर से श्रीमती मंजू माता जी तथा विशिष्टजनों में श्री सी.एल. यादव, श्री के.आर. श्रीवास, सुशीलपुरी गोस्वामी सहित भारी संख्या आर्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन ऋषि लंगर के साथ सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : सी.एल. यादव

वेदप्रचार मण्डल आर्यावर्त्त एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद के संयुक्त तत्वावधान में

वैदिक क्षेत्र-चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक १५ जनवरी से ९ फरवरी २०२० तक

स्थान : मेला श्रीराम नगरिया पाञ्चाल घाट, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

: निवेदक :

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री

अध्यक्ष-वेदप्रचार मण्डल आर्यावर्त्त

प्रधान-जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद

दूरभाष : ९४५००१८१४१

डी.ए.वी. छाल की वैज्ञानिक प्रतिभा : "आदर्श साहू"

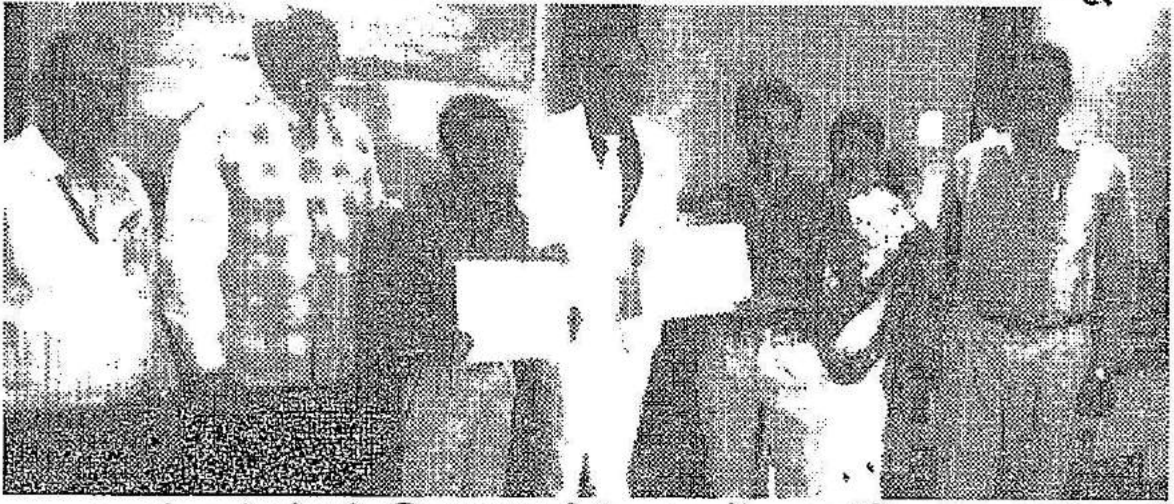

छाल (रायगढ़)। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एस.ई.सी.एल. छाल में कक्षा ११वीं में अध्ययनरत आदर्श साहू इको फ्रेंडली स्मार्ट हाऊस पर एक प्रोजेक्ट बनाया है, जो घर स्कूल आफिस व सार्वजनिक स्थलों पर होने वाले विद्युत के अपव्यय को रोकता है। मुख्य बात है कि इसकी कीमत इससे ऐसे सस्ते उपकरण लगाए हैं, जो ६ माह में ही इतनी बिजली बचाना होगा कि स्वयं का खर्च पूरा कर लेगा। उसने अपने स्वयं के घर में इसे लगाया है। उसके इस प्रोजेक्ट को छ.ग. शासन की ओर से राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रदर्शन हेतु चयन किया गया है, जो कि २७ से ३१ दिसम्बर को तिरुवन्तपुरम केरल में होना सुनिश्चित हुआ है। अग्निदूत परिवार इस छात्र प्रतिभा को एवं इसे मार्गदर्शन करने वाले विज्ञान शिक्षक श्री अजय शर्मा को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता है।

– सम्पादक

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

आर्यसमाज बैजनाथपारा के तत्वावधान में श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय, संतोषीनगर, रायपुर में सम्पन्न श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर 34वाँ वार्षिक महोत्सव एवं त्रि-दिवसीय वैदिक यज्ञ कार्यक्रम की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 जनवरी 2020 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१